मे मि त्रि संचार
Me Mi Tri Sanchar

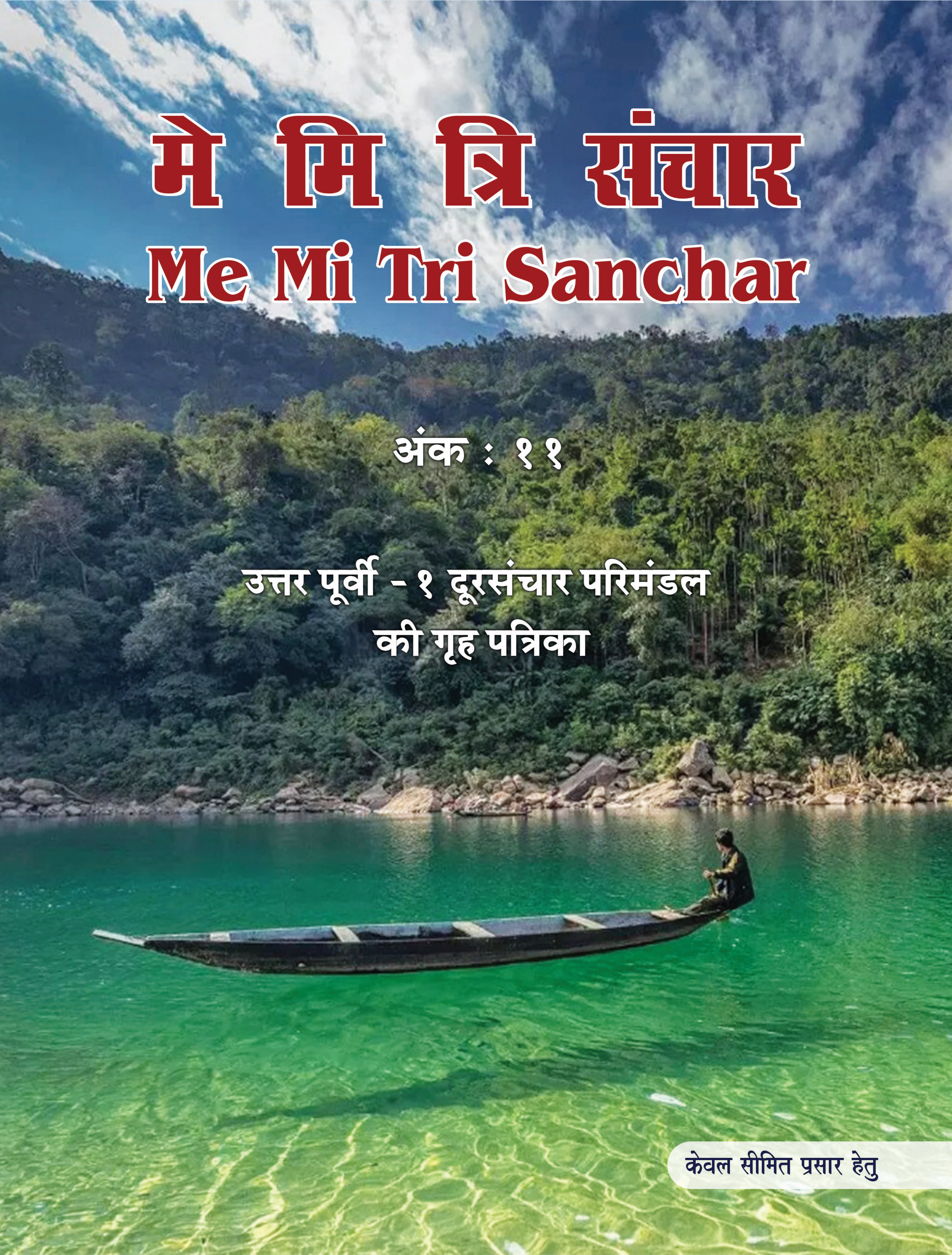

अंक : ११

उत्तर पूर्वी - १ दूरसंचार परिमंडल
की गृह पत्रिका

केवल सीमित प्रसार हेतु

BSNL
Connecting Bharat
Securely · Affordably · Reliably
25
2000-2025
BSNL Silver Jubilee Celebrations
Celebrating 25 years of Connecting Bharat

भारत संचार निगम लिमिटेड

उत्तर पूर्वी -१ दूरसंचार परिमंडल की गृह पत्रिका

मे मि त्रि संचार

वर्ष : २०२६ अंक : ग्यारवा

प्रकाशन समिति

संरक्षक: श्री यश पान्हेकर

मुख्य महाप्रबंधक, उत्तर पूर्वी-१ दूरसंचार परिमंडल, शिलांग

मुख्य संपादक: श्री के पट्टान

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

मुख्य महाप्रबंधक का कार्यालय, उत्तर पूर्वी-१ दूरसंचार परिमंडल, शिलांग

सम्पादकीय मंडल: श्री जी. आर. पथाव

मुख्य लेखा अधिकारी (आई. एफ. ए.)

श्री अनिल कुमार स्वामी कुरल्लु

सहायक महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं सामान्य)

श्री रमानुज कमल

राजभाषा अधिकारी/उप मंडल अभियंता (सा.)

* पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी विचार है, संपादक मंडल किसी प्रकार उसके लिए उत्तरदायी नहीं है ।

* पत्रिका में छपे आंकड़े केवल जानकारी के लिए हैं इसके किसी भी प्रकार के इस्तेमाल या उदाहरण कि लिए संपादक मंडल जिम्मेदार नहीं हैं ।

* पत्रिका केवल आंतरिक वितरण हेतु मात्र हैं ।

सम्पर्क सूत्र : राजभाषा अनुभाग - मुख्य महाप्रबंधक का कार्यालय, उत्तर पूर्वी-१ दूरसंचार परिमंडल शिलांग ।

यश पान्हेकर
मुख्य महाप्रबंधक
पूर्वोत्तर-१ परिमंडल

संदेश

प्रिय साथियो,

यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि बीएसएनएल, पूर्वोत्तर-१ परिमंडल की हिंदी गृह पत्रिका 'मेमित्रि संचार' अपने प्रकाशन के 11वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। इस सुखद अवसर पर मैं पत्रिका के संपादकीय मंडल तथा इसमें रचनात्मक योगदान देने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

हिंदी केवल संवाद या परस्पर जुड़ाव का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी भावनाओं, संवेदनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने वाली सशक्त भाषा है। यह हमें एक-दूसरे से जोड़ने और विविधताओं के बीच एकता की भावना को मजबूत करने का कार्य करती है। राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक और सहज प्रयोग हमारे कार्यालयीन कार्यों को सरल, प्रभावी और जनोन्मुख बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

पूर्वोत्तर भारत अपनी भाषायी, सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता के लिए विशिष्ट पहचान रखता है। ऐसे समृद्ध और बहुरंगी परिवेश में हिंदी विभिन्न भाषाओं, क्षेत्रों और संस्कृतियों के बीच आपसी समझ और समन्वय का एक सशक्त सेतु बनकर उभरती है। बीएसएनएल जैसे केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम में हिंदी की यह भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि हमारी कार्यसंस्कृति की सफलता आपसी सहयोग, समन्वय, सहभागिता और प्रभावी अभिव्यक्ति पर निर्भर करती है। हिंदी न केवल विचारों और भावनाओं को सहज रूप से व्यक्त करने का माध्यम है, बल्कि यह विभिन्न भाषायी पृष्ठभूमि से आने वाले कर्मचारियों को एक-दूसरे से जोड़ने और संगठनात्मक एकता को मजबूत करने का भी प्रभावी माध्यम है।

'मेमित्रि संचार' केवल एक हिंदी पत्रिका नहीं है, बल्कि यह हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा, अनुभवों, विचारों और संवेदनाओं का प्रतिबिंब है। इसके माध्यम से हम अपने कार्यक्षेत्र से जुड़े अनुभवों के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति, समाज और जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी साझा करते हैं। पत्रिका का निरंतर 11 वर्षों तक प्रकाशित होना इसकी लोकप्रियता और सभी के सहयोग का प्रमाण है।

हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा हमें केवल हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का अवसर ही नहीं देते, बल्कि यह आत्ममंथन करने का भी समय है कि हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिक सहज, सरल और प्रभावी उपयोग किस प्रकार कर सकते हैं। मेरा विश्वास है कि हिंदी का प्रयोग किसी औपचारिकता तक सीमित न रहकर हमारी कार्यशैली का स्वाभाविक हिस्सा बनना चाहिए।

मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह करता हूँ कि वे हिंदी में कार्य करने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएँ और अपनी रचनात्मक प्रतिभा को भी हिंदी के माध्यम से अभिव्यक्त करें। भाषा तभी जीवंत रहती है, जब उसका प्रयोग जीवन और कार्य - दोनों में निरंतर होता रहे।

आइए, हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़े के इस अवसर पर हम संकल्प लें कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग को और अधिक व्यापक बनाएँगे तथा बीएसएनएल की कार्यसंस्कृति को अधिक प्रभावी, सरल और आत्मीय बनाने में अपना योगदान देंगे।

'मेमित्रि संचार' की 11वीं वर्षगाँठ पर एक बार पुनः सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि यह पत्रिका भविष्य में भी हमारे विचारों को स्वर देती रहेगी और हमारी रचनात्मक ऊर्जा को नई दिशा प्रदान करती रहेगी।

हिंदी के प्रति सम्मान, हिंदी का निरंतर प्रयोग और हिंदी के माध्यम से प्रभावी संचार — यही हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता बने।

शुभकामनाओं सहित,

यश पान्हेकर
मुख्य महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर-१ परिमंडल

टी. मग
प्रधान महाप्रबंधक
(एसएवंएम/ट्रान्स)

संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे हर्ष हो रहा है कि आज हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर भारत संचार निगम लिमिटेड,उत्तर पूर्व-१ परिमंडल की विभागीय हिंदी पत्रिका "मेमित्रि संचार" का ग्यारवा अंक प्रकाशन किया जा रहा है |

"मेमित्रि संचार" के प्रकाशन हेतु हमारे कार्यालय के सभी स्थानिक और विविध प्रान्तों से आये आधिकारियों एवं कर्मचारियोंने जो एक सामूहिक प्रयास हिंदी राजभाषा के प्रति जताया है वो एक रूप में प्रशंसनीय कार्य और बड़ी उपलब्धि है|

यह पत्रिका हमारे संगठन की एकता, सहयोग और सामूहिक प्रयासों का आईना है। यह पत्रिका केवल एक सूचना माध्यम नहीं, बल्कि हमारे विचारों, उपलब्धियों और भावनाओं को जोड़ने का सेतु है। अपना ज्ञान, अनुभव और समझ को साझा करने का एक महत्वपूर्ण मंच है |

आपका हर लेख, अनुभव और विचार हमारे संगठन के लिए प्रेरणा और ऊर्जा का स्रोत है।

आप सभी का हार्दिक अभिनंदन कि आप ने विभिन्न विषयों पर हिंदी भाषा में लेखन का प्रयास किया। यह प्रयास न केवल हमारी राष्ट्रभाषा को प्रोत्साहित करता है, बल्कि देश की एकता और विविधता के सुंदर प्रतिबिंब को भी दर्शाता है।

हमारा समाज तभी सशक्त होगा जब हम अपनी भाषा और संस्कृति को गर्व से अपनाएँ और उसका संवर्धन करें। आप सभी आधिकारियों एवं कर्मचारियों के इस प्रयास से एकता और संगठन स्नेह की भावना को आधिक रूप से रोशन करता है ।

आपके उज्जवल भविष्य और इसी प्रकार के प्रयासों के लिए अनेक अनेक शुभकामनाएँ।

टी. मग
प्रधान महाप्रबंधक
(एसएवंएम/ट्रान्स)

अनुक्रमणिका (Index)

1.	बीएसएनएल – देश की शान	1
2.	मेघालय	1
3.	संचार की डोर	6
4.	संचार में शारीरिक भाषा का क्या महत्व है ?	9
5.	कार्यालय का वातावरण : जहाँ काम के साथ मन भी जुडा हो	15
6.	त्रिपुरा – मेरी पहली कर्मभूमी	19
7.	भविष्य हमारे हाथों में	19
8.	राही और दीया	20
9.	बीएसएनएल	20
10.	मैत्री का दीप	21
11.	जीवन की कहानी	22
12.	हम बेवफा हरगिज न थे	25
13.	मेरा पक्षी	26
14.	सुविचार	26
15.	स्कूल	27
16.	रिश्तों	27
17.	टेन्योर पोस्टिंग	28
18.	वृक्ष हमारे जीवनदाता	29
19.	प्रकृति	31
20.	एक नारी	31
21.	एच आर टीम एक परिवार	32
22.	सच्चाई की ताकत	34
23.	सावन की बारिश	34
24.	कुछ मोड़कर देखे , कुछ जोड़कर देखे	35
25.	पहाड़ों के धागे: मेघालय और त्रिपुरा को उनके हतकरघा कारीगरों की नजरों में	36
26.	Strategy to transform Rural Economy of North Eastern tribal states	40
27.	कडवा सच	43
28.	समय	43
29.	अंग्रेजी शब्दों के हिंदी अर्थ	44

बीएसएनएल – देश की शान

भारत की धरती पर गूँजे, बीएसएनएल का नाम,
हर गाँव और शहर तक पहुँचाए, संचार का पैगाम।
दूरियाँ चाहे जितनी हों, जोड़ता हर इंसान,
देश की सेवा में सबसे आगे, बीएसएनएल महान।
मोबाइल हो या इंटरनेट, हर सेवा में पहचान,
मुश्किल राहों में भी रखता, देश का ऊँचा मान।
पहाड़ों से मैदानों तक, पहुँचाए अपनी बात,
हर मौसम में साथ निभाए, दिन हो या फिर रात।
देश की प्रगति में देता, अपना पूरा योगदान,
हर भारतीय के दिल में है, इसका अलग स्थान।
4G की तेज़ रफ्तार से, बढ़ता जाए कारवाँ,
नए युग की नई तकनीक से, रोशन हो हिंदुस्तान।
सरकारी सेवा का प्रतीक, भरोसे की पहचान,
कर्मचारियों की मेहनत से, बढ़ता इसका मान।
आँधियों में भी डटा रहे, बनकर मजबूत दीवार,
देश के हर कोने में पहुँचे, इसका संचार।
आज नहीं तो कल जरूर, छुएगा नई उड़ान,
आत्मनिर्भर भारत के सपनों की बने पहचान।
बीएसएनएल यूँ ही बढ़ता रहे, यही हमारा अरमान,
देश की शान, जनता की जान — बीएसएनएल महान!

कुमार प्रशांत
जेटीओ एचएलआर

मेघालय

मेघालय की इस धरा पर
बडी ही सुंदर बेला,
खासी, जयंतिया और गारो
करते यहाँ बसेरा !

ऊँचे पर्वत, बहता पानी
अद्भुत है ये नजारा,
घास, पेड और लता ने
बांध दिया है समां सारा!

सॉकर के खेल का जूनून है
मेस्सी इनका सितारा,
भारत की पूर्वोत्तर सीमा में
बसा ये राज्य हमारा!

महाराष्ट्र से मेघालय तक
एक है भारत राष्ट्र सारा,
एकता का मंत्र संजोकर
निरंतर सेवा दे BSNL हमारा!

समीर खरे
उप मंडल अभियंता (बी एन)

संचार की डोर

संचार की डोर

दूर कहीं जब कोई अपना,
अपनों को आवाज़ लगाता है,
टूटे रिश्तों की खामोशी में,
संचार से पुल बन जाता है।

एक सिग्नल की छोटी-सी लहर,
कितने दिलों को जोड़ती है,
एक संदेश की छोटी-सी पंक्ति,
कितनी दूरियाँ तोड़ती है।

कभी पहाड़ों की ऊँचाई में,
कभी रेगिस्तान की रेतों में,
कभी गाँवों की पगडंडी पर,
कभी शहरों की सड़कों में।

हमने हर मुश्किल को सहकर,
संचार की राह बनाई है,
अँधियारे में दीप जलाकर,
आवाज़ हर दिल तक पहुँचाई है।

जब आँधी आई, बारिश आई,
जब नेटवर्क ने साथ छोड़ा,
हमने फिर तकनीक के बल पर,
हर टूटा रिश्ता फिर जोड़ा।

रात गई और भोर हुई तो,
नेटवर्क फिर मुस्काया है,
किसी दूर बैठे अपने ने,
फिर अपनों को बुलाया है।

हम केवल तार नहीं जोड़ते,
हम रिश्तों को जोड़ते हैं,
हम केवल नेटवर्क नहीं देते,
हम सपनों को जोड़ते हैं।

माँ की ममता बेटे तक,
पिता की चिंता बेटी तक,
विद्यार्थी की मेहनत मंज़िल तक,
व्यापारी की उम्मीद बाजार तक।

हर आवाज़ के पीछे कोई,
मेहनत अपनी लगाता है,
संचारकर्मी चुपचाप मगर,
देश को आगे बढ़ाता है।

तकनीक बदलती जाएगी,
नए दौर आते जाएँगे,
लेकिन सेवा की यह भावना,
हमेशा साथ निभाएँगे।

हम हैं उस डोर के प्रहरी,
जो भारत को जोड़ रही है,
हर आवाज़ को मंज़िल देकर,
नई कहानी गढ़ रही है।

नमन उन सभी हाथों को,
जो संचार की राह सजाते हैं,
और उन कर्मवीरों को भी,
जो भारत को जोड़ते जाते हैं।

संजीव यादव
जे टी ओ (नॉक)

Hindi Pakhwada - 2025

Plantation Programme

Vigilance Awareness Week 2025

Welcome of CGM

BharatNet Vendor Meet

संचार में शारीरिक भाषा का क्या महत्व है?

आप रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अपनी शारीरिक भाषा के बारे में कितनी बार सोचते हैं?

ज़्यादातर समय, हमारी शारीरिक भाषा अचेतन होती है। हम बिना ध्यान दिए ही स्वाभाविक रूप से कुछ खास तरह से हिलते-डुलते हैं।

इसका मतलब है कि हम हर समय संकेत भेज रहे होते हैं, भले ही हमें इसका एहसास न हो।

अपनी और दूसरों की शारीरिक भाषा के संकेतों को समझकर, हम अपने संचार को व्यापक स्तर पर बेहतर बना सकते हैं।

इस पोस्ट में, हम विस्तार से जानेंगे कि शारीरिक भाषा क्या है, यह क्यों महत्वपूर्ण है, आप अपनी शारीरिक भाषा का लाभ कैसे उठा सकते हैं और कार्यस्थल पर अपनी शारीरिक भाषा को कैसे बेहतर बना सकते हैं।

शारीरिक भाषा क्या है?

शारीरिक भाषा अशाब्दिक संचार है जिसमें हमारी शारीरिक मुद्रा, हाथ के इशारे और शरीर की हरकतें शामिल हैं।

हम अपने दैनिक जीवन में अक्सर शारीरिक भाषा के माध्यम से संवाद करते हैं, आमतौर पर अवचेतन रूप से।

अल्बर्ट मेहराबियन ने यह सिद्धांत दिया था कि अशाब्दिक संचार, जैसे कि आवाज़ का लहजा और चेहरे के भाव, सामूहिक रूप से सभी संचार का 93% हिस्सा बनाते हैं। बोले गए शब्द केवल 7% होते हैं!

इसका मतलब यह है कि यद्यपि हम अपने विचारों को व्यक्त करने और बताने के लिए मौखिक संचार (शब्दों) का उपयोग करते हैं, लेकिन हमारी शारीरिक भाषा अक्सर हमारे श्रोताओं को हमारी अपेक्षा से कहीं अधिक संदेश देती है।

कुछ विशेषज्ञ मनोवैज्ञानिक तो यह भी कहते हैं कि शारीरिक भाषा "किसी व्यक्ति की सच्ची भावनाओं को प्रकट कर सकती है।"

जब हम सार्वजनिक रूप से भाषण दे रहे हों या छोटे या बड़े श्रोताओं के सामने प्रस्तुति दे रहे हों, तो शारीरिक भाषा अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, आइए जानते हैं क्यों।

संचार में शारीरिक भाषा की क्या भूमिका है?

शारीरिक भाषा हाथ के इशारों, हाव-भाव और शारीरिक मुद्राओं के माध्यम से दिए जा रहे मौखिक संदेश को बढ़ाती और सशक्त बनाती है। यह हमें उन भावनाओं और इरादों को व्यक्त करने में मदद करती है जिन्हें केवल शब्दों के माध्यम से पर्याप्त रूप से व्यक्त नहीं किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, सिर हिलाने से असहमति व्यक्त हो सकती है, जबकि सिर हिलाने से सहमति व्यक्त हो सकती है। ये केवल दो बहुत ही सरल उदाहरण हैं। शारीरिक भाषा को किसी भी मौखिक संवाद के लिए एक अतिरिक्त लाभ के रूप में सोचें।

संचार में शारीरिक भाषा क्यों महत्वपूर्ण है?

शारीरिक हावभाव हमें किसी व्यक्ति के वास्तविक विचारों और भावनाओं को समझने में मदद करता है, न कि केवल उसकी आवाज़ के लहजे और बोलने के तरीके पर निर्भर करता है। यह अनकहे भावों को समझने का एक अतिरिक्त माध्यम है, जो कार्यस्थल में बेहद महत्वपूर्ण हो सकता है।

हम शारीरिक हावभाव का उपयोग करके अपने शब्दों को अधिक प्रभावशाली बना सकते हैं और अधिक प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं।

इस उदाहरण पर विचार करें:

भाषण के दौरान नकारात्मक शारीरिक हावभाव दिखाने वाला वक्ता (श्रोताओं की ओर पीठ करना या झुककर खड़ा होना) अपने श्रोताओं को आकर्षित करने और उन्हें अपनी बात सुनने के लिए प्रेरित करने में कम सफल होगा।

यह सुनने में थोड़ा कठोर लग सकता है, लेकिन हमारा मानव मस्तिष्क इसी तरह काम करता है।

वक्ता न केवल अपने श्रोताओं की रुचि खो रहा है, बल्कि उनका ध्यान विषय से भी भटका रहा है – चाहे वह विषय कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो। कोई भी ऐसा नहीं चाहता।

शारीरिक भाषा के महत्व के 3 मुख्य कारण:

1. दूसरों की भावनाओं को समझना

शारीरिक भाषा को समझने की क्षमता का अर्थ है कि आप बिना बोले और प्रतिक्रियाओं के माध्यम से यह समझ सकते हैं कि दूसरा व्यक्ति वास्तव में कैसा महसूस कर रहा है।

कुछ प्रकार की शारीरिक भाषा को पहचानना मुश्किल हो सकता है क्योंकि वे बहुत तेजी से बदलती हैं, इसलिए आपको पूरी तरह से ध्यान देना होगा।

2. अपनी सच्ची भागीदारी दर्शाना

क्या आप बिना कुछ कहे किसी को यह दिखाना चाहते हैं कि आप उनकी बातचीत में पूरी तरह से शामिल हैं?

अपनी शारीरिक भाषा का प्रयोग करें।

यदि आप किसी से आमने-सामने बात कर रहे हैं, तो अच्छी मुद्रा, आंखों का संपर्क बनाए रखना, बातचीत के दौरान खुले हाथों के इशारे और मुस्कान का उपयोग करके अपनी शारीरिक भाषा को खुला रखें।

इसका मतलब है कि हाथ बांधकर न बैठें, कमर पर हाथ न रखें, कठोर इशारे न करें या नज़रें न मिलाएं! उदासीन शारीरिक हावभाव से ऐसा लग सकता है कि आप सामने वाले की बातों में दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं - भले ही आप ऐसा न कर रहे हों।

ध्यान से सुनते समय अपने शारीरिक हावभाव पर ध्यान देने से आपको बातचीत करने वाले किसी भी व्यक्ति के साथ संबंध बनाने और उन्हें विकसित करने में मदद मिलेगी।

3. अपना आत्मविश्वास दिखाएं

हर कोई आत्मविश्वासी नहीं होता, खासकर अगर आप दबाव में या लोगों के समूह के सामने असहज महसूस करते हैं।

लेकिन दुनिया के सबसे आत्मविश्वासी दिखने वाले लोगों के भी ऐसे दिन होते हैं जब वे आत्मविश्वासी महसूस नहीं करते लेकिन फिर भी आत्मविश्वास से भरे दिखते हैं।

तो वे ऐसा कैसे करते हैं?

शारीरिक हावभाव का उपयोग करके।

यदि आप आत्मविश्वासी शारीरिक हावभाव प्रदर्शित करते हैं, तो आपके श्रोता आपके शब्दों पर विश्वास करने और आपका अनुसरण करने की अधिक संभावना रखते हैं।

क्या शारीरिक हावभाव शब्दों से अधिक प्रभावशाली है?

“कर्म शब्दों से अधिक बोलते हैं।”

आपने शायद यह कहावत एक-दो बार सुनी होगी। लेकिन क्या केवल शारीरिक हावभाव ही शब्दों से अधिक शक्तिशाली है?

हमारा मानना है कि मौखिक और गैर-मौखिक संचार दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं और ये मिलकर एक शक्तिशाली प्रभाव पैदा करते हैं। प्रभावी ढंग से उपयोग किए जाने पर, ये समग्र संदेश को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं, श्रोता पर एक स्थायी छाप छोड़ सकते हैं और किसी भी संवाद को सफल या असफल बना सकते हैं।

कार्यस्थल पर शारीरिक भाषा के संकेतों का महत्व

कार्यस्थल पर शारीरिक भाषा का बहुत महत्व है। भले ही आप मंच पर गाना नहीं गा रहे हों या कोई फुटबॉल मैनेजर सवालों के जवाब नहीं दे रहा हो, इसका मतलब यह नहीं है कि कार्यस्थल पर आप पर शारीरिक भाषा के वही सिद्धांत लागू नहीं होते।

यदि आप यह दिखाना चाहते हैं कि आप एक अच्छे टीम सदस्य हैं और संगठन और अपने सहकर्मियों की वास्तव में परवाह करते हैं, तो शारीरिक भाषा ही इसका जवाब है।

कार्यस्थल पर शारीरिक भाषा आपको परियोजनाओं, अपनी टीम और उनकी सफलताओं के प्रति अपना उत्साह या नए टीम सदस्यों के साथ अपनी मित्रता दिखाने में मदद कर सकती है।

शारीरिक भाषा का उपयोग करने से आपको सहकर्मियों और टीम सदस्यों के साथ बातचीत करना आसान हो जाएगा और आप कार्यस्थल पर अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे।

कार्यस्थल पर गैर-मौखिक संकेतों का उपयोग न करने से आपको गलत समझा जा सकता है और दूसरों को आपकी बातचीत या आपके व्यक्तित्व के बारे में आपके वास्तविक विचारों को लेकर भ्रम हो सकता है।

यदि आप किसी को घूरते हैं और अनजाने में अपने दांत पीसते हैं, तो दूसरे इसे नोटिस करेंगे और रक्षात्मक हो जाएंगे। हम आपको ऐसा न करने की सलाह देते हैं!

कार्यस्थल पर अधिक प्रभावी संचार के लिए 5 बॉडी लैंग्वेज टिप्स

1. धीरे चलें

यदि आपने कभी कोई प्रस्तुति देखी है जिसमें वक्ता जल्दी-जल्दी बोलता है, तेजी से हाथ के इशारे करता है और एक जगह स्थिर नहीं रह पाता, तो आप इसे समझ सकते हैं।

जल्दी-जल्दी चलना और जल्दबाजी दिखाना यह दर्शाता है कि आप उस स्थिति में असहज हैं और इससे श्रोता भी असहज महसूस कर सकते हैं।

भले ही आप असहज महसूस कर रहे हों, लेकिन आप नहीं चाहेंगे कि आपके श्रोताओं को इसका पता चले।

अपने शरीर की गति धीमी करके, आप अधिक सहज और आत्मविश्वासी बनेंगे - और आपके श्रोता भी!

2. अपने साथियों से प्रतिक्रिया लें

दिन भर की विभिन्न बातचीत के दौरान अपनी बॉडी लैंग्वेज के प्रभाव को समझने का प्रयास करें। यह भी उपयोगी हो सकता है कि आप जिनसे बात कर चुके हैं उनसे प्रतिक्रिया लें ताकि आप वास्तव में समझ सकें कि आपकी बॉडी लैंग्वेज दूसरों को कैसी लगती है।

3. खुली मुद्रा अपनाएं

खुली और बंद मुद्रा में क्या अंतर है?

• खुली मुद्रा में व्यक्ति सहज और खुले शारीरिक हावभाव का प्रयोग करता है, जैसे कि सामने वाले व्यक्ति की ओर मुंह करके बैठना या हाथों को फैलाकर बैठना, ताकि वह मिलनसार और ग्रहणशील प्रतीत हो।

बंद मुद्रा में व्यक्ति बात करते समय अपनी बाहों को क्रॉस करके बैठता है या सामने वाले व्यक्ति से मुंह फेर लेता है। यह रक्षात्मकता और सामने वाले व्यक्ति या बातचीत में अरुचि दर्शाता है।

खुली मुद्रा का प्रयोग करके आप आसानी से संबंध स्थापित कर सकते हैं।

4. चेहरे के हाव-भाव की नकल करें

चेहरे के हाव-भाव सार्वभौमिक होते हैं। एक मुस्कान बिना एक शब्द बोले बहुत कुछ कह सकती है।

इसलिए चाहे आप किसी ऐसे मित्र से बात कर रहे हों जो कठिन समय से गुजर रहा हो या आप किसी महत्वपूर्ण बैठक में हों जहाँ बड़े निर्णय लेने हों, अपने आस-पास के लोगों के चेहरे के हाव-भाव की नकल करने का प्रयास करें। यह मित्रता और खुलेपन को दर्शाने का एक शानदार तरीका है और इससे बोलने वाले को यह महसूस होता है कि उसकी बात सुनी गई है।

उदाहरण के लिए, यदि कोई मित्र आपसे अपनी किसी निजी समस्या के बारे में बात करने आता है, तो वह सहानुभूति और समझ चाहता है, न कि क्रोध या अत्यधिक खुशी। ऐसी स्थितियों में चेहरे के हाव-भाव की नकल करके, आप उनकी भावनाओं को मान्यता दे सकते हैं और दिखा सकते हैं कि वे इस समस्या में अकेले नहीं हैं।

5. आत्मविश्वास और मुखरता पाठ्यक्रम में भाग लें

यदि आप कार्यस्थल पर या अपने सहकर्मियों के साथ सकारात्मक प्रभाव डालना चाहते हैं, तो सबसे पहले यह समझें कि कुछ स्थितियों में आपको कैसे देखा जाता है। इससे आपको किसी भी परिस्थिति में मनचाहे परिणाम प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

सकारात्मक शारीरिक भाषा में महारत हासिल करना रातोंरात नहीं हो सकता - सहज रूप से खुले, आत्मविश्वासी और सक्रिय होने में समय लगता है।

लेकिन इस पर काम करें और अगली बार पोकर खेलते समय आप खुद को थोड़ा बेहतर प्रदर्शन करते हुए पाएंगे।

शारीरिक भाषा के उपयोग के शीर्ष 5 लाभ

शारीरिक भाषा का उपयोग अपने संदेश को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने और वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है। कार्यस्थल पर अपने संचार को बेहतर बनाने के लिए शारीरिक भाषा का उपयोग करने के पाँच सबसे प्रभावी तरीके यहाँ दिए गए हैं:

1. आपके संदेश का पूरक

अशाब्दिक संकेत बोले गए शब्दों के माध्यम से दिए गए संदेश को बढ़ाने और मजबूत करने का काम करते हैं। उदाहरण के लिए, कार्यस्थल में, एक प्रबंधक किसी कर्मचारी के उत्कृष्ट कार्य की सराहना करते हुए उसकी पीठ थपथपाकर बधाई दे सकता है।

2. आपके मुख्य बिंदुओं पर जोर देता है

इसमें अशाब्दिक संकेतों को विशिष्ट शब्दों या वाक्यांशों के साथ मिलाकर अपने मौखिक संचार के महत्व को रेखांकित या उजागर करना शामिल है।

उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति मेज पर हाथ पटकते हुए "इसे अभी करो" पर जोर देता है, तो वह अपने संदेश की तात्कालिकता और महत्व को उजागर कर रहा है। हालांकि, यह क्रिया आक्रामक भी मानी जा सकती है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि इसे किस लहजे और तरीके से कहा गया है।

3. मौखिक संचार के विकल्प

अशाब्दिक संकेत मौखिक संचार को पूरी तरह से प्रतिस्थापित कर सकते हैं। सिर हिलाने या झुकाने मात्र से स्पष्ट "हाँ" या "ना" व्यक्त किया जा सकता है, जबकि कंधे उचकाने से अनिश्चितता का संकेत मिलता है। और जब कोई बाथरूम का रास्ता पूछता है, तो एक दोस्ताना इशारा और मुस्कान बिना कुछ कहे बहुत कुछ कह सकती है।

4. आपके संदेश को सुदृढ़ बनाता है

अशाब्दिक संकेत आपके मौखिक संदेश को सशक्त बनाने की शक्ति रखते हैं। उदाहरण के लिए, जब आप किसी को मौखिक रूप से "ट्रेन स्टेशन दाईं ओर है" कहकर निर्देश देते हैं और साथ ही उसी दिशा में हाथ से इशारा करते हैं, तो आप अपने निर्देश को सुदृढ़ कर रहे होते हैं और श्रोता को स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान कर रहे होते हैं कि उन्हें कहाँ जाना है।

5. समय बचाता है

मौखिक संकेतों को अशाब्दिक इशारों के साथ मिलाकर, आप अपने संदेश को शीघ्रता और कुशलता से संप्रेषित कर सकते हैं, जिससे अंततः आपका और आपके श्रोताओं दोनों का बहुमूल्य समय बचता है।

मुख्य बिंदु

- शारीरिक भाषा का अर्थ है अशाब्दिक संचार जैसे कि आँखों का संपर्क, हाथों की हरकतें और इशारे।
- शारीरिक भाषा संचार का एक आवश्यक रूप है क्योंकि यह हमें यह समझने में मदद करती है कि कोई व्यक्ति वास्तव में कैसा महसूस कर रहा है और क्या सोच रहा है।
- कार्यस्थल में अशाब्दिक संचार का उपयोग महत्वपूर्ण है क्योंकि यह यह दिखाने का अवसर प्रदान करता है कि आप वास्तव में बातचीत में शामिल हैं, दूसरे व्यक्ति की बातों में रुचि रखते हैं और आत्मविश्वास प्रदर्शित करते हैं।
- एक प्रभावी संचारक बनने के लिए, हमारे पाठ्यक्रमों में से किसी एक में भाग लेकर कार्यस्थल पर अपने शारीरिक हाव-भाव को सुधारना शुरू करें, एक खुली मुद्रा अपनाएं (हाथ बांधकर और झुककर न बैठें) और सहकर्मियों से प्रतिक्रिया लें ताकि आपको पता चल सके कि किन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।
- गैर-मौखिक संचार के लाभों में शामिल हैं: यह आपके संदेश को पूरक बनाता है, मुख्य बिंदुओं पर जोर देने में मदद करता है, समय बचाता है, मौखिक संचार का विकल्प हो सकता है, और आपके संदेश को सुदृढ़ करता है।

यश पान्हेकर
मुख्य महाप्रबंधक

BSNL
Connecting Bharat
Your
Entertainment
Just Got
Bigger!
BSNL Free
Entertainment TV
Powered by TangoTV
Live TV
Movies
Web Series
Music
Devotional
& more
Now available
on the
New BSNL Selfcare App
Download Now
Google Play
App Store
On Free Trial
www.bsnl.co.in | Connect with us @ 1800-180-1503 | BSNL SELFCARE NEW APP Google Play App Store Follow us on

BSNL
Connecting Bharat
Data ki
tension khatam,
20 GB ka high
speed dhamaka
20 GB Data
₹39
1 Day
Post 20 GB usage, speed is restricted to 40 Kbps
www.bsnl.co.in | Connect with us @ 1800-180-1503 | BSNL SELFCARE NEW APP Google Play App Store Follow us on

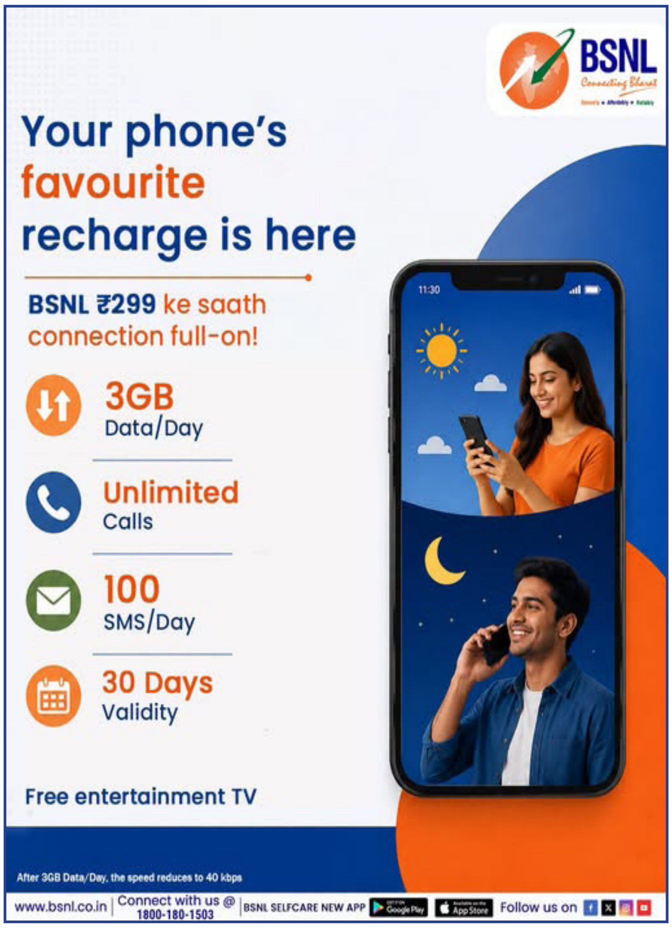
BSNL
Connecting Bharat
Your phone's
favourite
recharge is here
BSNL ₹299 ke saath
connection full-on!
3GB
Data/Day
Unlimited
Calls
100
SMS/Day
30 Days
Validity
Free entertainment TV
After 3GB Data/Day, the speed reduces to 40 kbps
www.bsnl.co.in | Connect with us @ 1800-180-1503 | BSNL SELFCARE NEW APP Google Play App Store Follow us on

BSNL
Connecting Bharat
Bas ₹1 se shuru karo,
connection ka naya chapter
Meet Freedom 2.0, your new way to experience
BSNL, with more value right from the start
FREE SIM
@
₹1
1GB Data/Day
100 SMS/Day
Unlimited
calls
24
Days validity
BSNL
Freedom 2.0
Offer valid till
12th sep 2026
For New
Users Only
Visit your nearest
BSNL CSC or Authorised
Retailer to get started
Why wait? Your BSNL journey starts here
www.bsnl.co.in | Connect with us @ 1800-180-1503 | BSNL SELFCARE NEW APP Google Play App Store Follow us on

Christmas Celebration

CGMT met Shri Apoorva Bhatnagar, CSO, Aasam Rifles

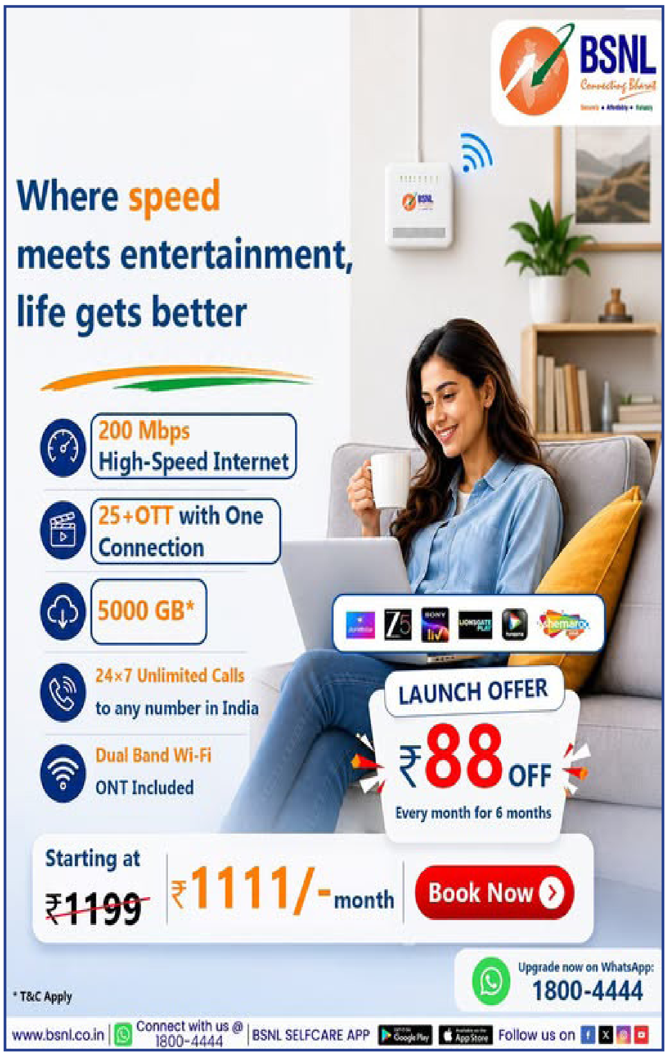

कार्यालय का वातावरण : जहाँ काम के साथ मन भी जुडा हो

किसी भी कार्यालय की सफलता केवल उसके भवन, सुविधाओं, तकनीकी संसाधनों या कर्मचारियों की संख्या पर निर्भर नहीं करती। किसी संस्था की वास्तविक ताकत उसके कार्य वातावरण में दिखाई देती है। जिस कार्यालय में कर्मचारियों के बीच आपसी सम्मान, विश्वास, सहयोग और सकारात्मक सोच होती है, वहाँ काम करने की ऊर्जा और जिम्मेदारी दोनों दिखाई देती हैं। इसके विपरीत, जहाँ तनाव, भय, अपमान, भेदभाव और अनावश्यक दबाव का वातावरण हो, वहाँ धीरे- धीरे कर्मचारियों का मनोबल और कार्य के प्रति उत्साह कम होने लगता है।

कार्यालय में कर्मचारी अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बिताते हैं। इसलिए कार्यालय का वातावरण उनके काम तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उनके मानसिक संतुलन और व्यक्तिगत जीवन को भी प्रभावित करता है। यदि कोई व्यक्ति रोज कार्यालय में तनाव और अपमान की भावना लेकर आता है, तो उससे लंबे समय तक बेहतर प्रदर्शन की अपेक्षा करना व्यावहारिक नहीं है। इंसान से मशीन की तरह केवल परिणाम नहीं लिया जा सकता; उसे सम्मान और विश्वास भी चाहिए।

कार्यालय में पद और जिम्मेदारियाँ अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन सम्मान सभी के लिए समान होना चाहिए। वरिष्ठ अधिकारी को निर्देश देने और जवाबदेही तय करने का पूरा अधिकार है, लेकिन किसी कर्मचारी के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाना नेतृत्व का हिस्सा नहीं हो सकता। किसी गलती को बताना आवश्यक है, लेकिन गलती के लिए सार्वजनिक रूप से अपमानित करना आवश्यक नहीं। एक अच्छे अधिकारी की पहचान इस बात से होती है कि वह गलती सुधारता है, इंसान का हौसला पस्त नहीं करता।

भय पर आधारित कार्यसंस्कृति लंबे समय तक प्रभावी नहीं हो सकती। जब कर्मचारी को हर समय डांट, अपमान या प्रतिकूल कार्रवाई का डर रहता है, तो वह अपनी बात रखने और नई पहल करने से बचता है। वह केवल वही करता है जो उसे स्पष्ट रूप से कहा जाता है। इसके विपरीत, विश्वास का वातावरण कर्मचारी को जिम्मेदारी लेने, समस्याएँ सामने रखने और समाधान सुझाने के लिए प्रेरित करता है।

कार्यालय में संवाद (बातचीत, विचारों के आदान-प्रदान) की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। केवल आदेश देना ही संवाद नहीं है। कर्मचारियों की समस्याओं और सुझावों को सुनना भी प्रशासन का हिस्सा है। कई बार किसी कर्मचारी के अपेक्षित प्रदर्शन न कर पाने के पीछे उसकी लापरवाही नहीं, बल्कि संसाधनों की कमी, अस्पष्ट निर्देश या अत्यधिक कार्यभार हो सकता है। यदि अधिकारी कर्मचारी की बात सुनने के लिए तैयार हो, तो समस्या का वास्तविक कारण समझा जा सकता है।

निष्पक्षता भी अच्छे कार्य वातावरण की बुनियादी आवश्यकता है। कर्मचारियों को यह विश्वास होना चाहिए कि कार्य का वितरण, अवसर, मूल्यांकन और जिम्मेदारियाँ योग्यता तथा आवश्यकता के आधार पर निर्धारित की जाती हैं। यदि लोगों

को लगातार यह महसूस होने लगे कि व्यक्तिगत पसंद-नापसंद या निकटता योग्यता और मेहनत से अधिक महत्वपूर्ण है, तो धीरे-धीरे उनका विश्वास समाप्त हो जाता है। निष्पक्षता केवल नियमों का पालन नहीं है; यह कर्मचारियों के मन में विश्वास पैदा करने की प्रक्रिया भी है।

इसी प्रकार, कार्य का दबाव और जवाबदेही आवश्यक हैं, लेकिन उनकी भी एक सीमा होती है। कर्मचारी भी एक इंसान है। उसकी अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, भावनाएँ और निजी जीवन हैं। लगातार अत्यधिक दबाव और बिना उचित सहयोग के काम करवाने से उसकी कार्यक्षमता प्रभावित हो सकती है। इसलिए अच्छे प्रबंधन का उद्देश्य केवल अधिक कामलेना नहीं, बल्कि ऐसा वातावरण बनाना होना चाहिए जिसमें कर्मचारी अपनी क्षमता के अनुसार लंबे समय तक प्रभावी ढंग से काम कर सके। कारण यह

कि कर्मचारी के लिए वेतन महत्वपूर्ण है, लेकिन केवल वेतन ही उसकी कार्यप्रेरणा का आधार नहीं होता। सम्मान, पहचान और अपने काम के प्रति संतुष्टि भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं।

गलतियों के प्रति कार्यालय का दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण है। गलती होने पर जवाबदेही तय होनी चाहिए, लेकिन साथ ही सुधार का अवसर भी दिया जाना चाहिए। यदि कर्मचारी को अपनी गलती स्वीकार करने में डर लगेगा, तो वह उसे छिपाने की कोशिश कर सकता है। ऐसी संस्कृति संस्था के लिए अधिक नुकसानदायक होती है। एक स्वस्थ कार्यालय में गलती से सीखने और भविष्य में उसे न दोहराने की संस्कृति विकसित होनी चाहिए।

किसी कार्यालय के वातावरण पर नेतृत्व का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। वरिष्ठ अधिकारी जिस प्रकार कर्मचारियों के साथ व्यवहार करता है, वही धीरे-धीरे कार्यालय की संस्कृति बन जाती है। यदि नेतृत्व में विनम्रता, निष्पक्षता और

संवेदनशीलता है, तो कर्मचारी भी उसी भावना से काम करते हैं। यदि नेतृत्व में अहंकार, पक्षपात और अनावश्यक कठोरता है, तो उसका नकारात्मक प्रभाव पूरे संगठन पर पड़ता है।

ईमानदारी किसी भी कार्यालय की महत्वपूर्ण पूंजी है। ईमानदारी का अर्थ केवल आर्थिक मामलों में भ्रष्टाचार से दूर रहना नहीं है। इसका अर्थ है कि कर्मचारी अपने कार्य, उपस्थिति, समय, जिम्मेदारियों और रिपोर्टिंग के प्रति भी ईमानदार रहे। जो काम नहीं किया गया है, उसे किया हुआ दिखाना, किसी दूसरे के किए हुए काम का श्रेय लेना, गलत जानकारी देना या अपनी जिम्मेदारी से बचने के लिए बहाने बनाना भी कार्यस्थल की ईमानदारी को कमजोर करता है। एक ईमानदार कर्मचारी अपनी गलती स्वीकार करने में भी संकोच नहीं करता, क्योंकि वह जानता है कि गलती छिपाने से समस्या और बड़ी हो सकती है।

इसी प्रकार कार्यालय के निर्धारित समय का पालन प्रत्येक कर्मचारी की मूल जिम्मेदारी है। कार्यालय का समय केवल उपस्थिति दर्ज करने का समय नहीं है, बल्कि वह संस्था द्वारा कर्मचारी को दिए गए कार्य के लिए निर्धारित समय है। समय पर कार्यालय पहुँचना, निर्धारित समय तक कार्य करना और बिना उचित अनुमति के बार-बार अनुपस्थित न रहना अनुशासन का हिस्सा है। यदि कोई कर्मचारी कार्यालय के समय का सम्मान नहीं करता, तो इसका प्रभाव केवल उसके काम पर नहीं पड़ता, बल्कि अन्य कर्मचारियों पर भी पड़ता है।

समयपालन का अर्थ केवल सुबह समय पर कार्यालय पहुँचना नहीं है। इसका अर्थ बैठकों में समय पर पहुँचना, निर्धारित समय पर कार्य पूरा करना, फाइलों को अनावश्यक रूप से लंबित न रखना और समयसीमा का सम्मान करना भी है। किसी कर्मचारी की दक्षता का मूल्यांकन केवल इस आधार पर नहीं होना चाहिए कि वह कितना काम करता है, बल्कि इस आधार पर भी होना चाहिए कि वह अपना काम कितनी जिम्मेदारी और समयबद्धता से करता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कर्मचारी को केवल एक पद, संख्या या कार्यबल का हिस्सा नहीं समझना चाहिए। वह संस्था की मानवीय पूंजी है। उसका आत्मसम्मान, मनोबल और कार्य के प्रति विश्वास संस्था की उत्पादकता से सीधे जुड़े हुए हैं। कई बार एक छोटा-सा सम्मानजनक शब्द कर्मचारी में वह ऊर्जा पैदा कर देता है जो अनेक आदेश और निर्देश नहीं पैदा कर सकते।

अंततः एक अच्छे कार्यालय का अर्थ ऐसा स्थान नहीं है जहाँ कोई गलती न हो, कोई मतभेद न हो या काम का दबाव न हो। वास्तविक रूप से अच्छा कार्यालय वह है जहाँ समस्याओं के बावजूद लोगों के साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाता है; जहाँ अनुशासन है लेकिन भय नहीं; जहाँ जवाबदेही है लेकिन अपमान नहीं; जहाँ अधिकार है लेकिन अहंकार नहीं; और जहाँ काम के साथ मानवीय संवेदनाओं को भी महत्व दिया जाता है।

किसी संस्था की सफलता केवल उसके आंकड़ों और उपलब्धियों से नहीं मापी जानी चाहिए। यह भी देखा जाना चाहिए कि उन उपलब्धियों के पीछे काम करने वाले लोगों ने किस वातावरण में अपना योगदान दिया। यदि कर्मचारी सम्मानित, सुरक्षित और प्रेरित महसूस करते हैं, तो वे केवल अपना कर्तव्य पूरा नहीं करते, बल्कि संस्था की प्रगति में दिल से योगदान देते हैं। यही एक स्वस्थ, मानवीय और सफल कार्यसंस्कृति की सबसे बड़ी पहचान है।

कमलेन्दु चौधुरी

Blood Donation 2025

BSNL Day

Director FIN Welcome

FTTH EB

Republic Day 2026

Independence Day 2026

Independence Day 2026

त्रिपुरा – मेरी पहली कर्मभूमि

कुछ जगहें सिर्फ़ नक्शे पर नहीं होतीं,
वे हमेशा दिल में बस जाती हैं।

त्रिपुरा...
सिर्फ़ एक राज्य नहीं,
मेरी पहली कर्मभूमि, मेरा पहला विश्वास,
और मेरी ज़िंदगी का सबसे खूबसूरत अध्याय है।

नौ साल इस धरती ने, अपना मुझे बनाया,
हरियाली और हसीन वादियों और बहते झरनों का गीत सिखाया।

फाइबर, ट्रांसमिशन, एक्सचेंज संग बीता सुनहरा सफ़र,
त्रिपुरा, तेरा ऋणी रहूँगा, जब तक धड़केगा ये दिल हमसफ़र।

विशाल पोलोवालिया,
कनिष्ट अभियन्ता , अगरतला

भविष्य हमारे हाथों में

भविष्य कोई सपना नहीं,
हमसे ही उसका निर्माण है।
मेहनत, साहस, विश्वास लिए,
हर कदम नया अभियान है।
आज के कर्मों से कल सँवारें,
अपने सपनों को आकार दें।
हार मिले तो फिर उठ जाएँ,
उम्मीदों के दीप जलाएँ।
सोच बड़ी, प्रयास निरंतर,
जीवन को नई दिशा दें।
भविष्य हमारे हाथों में है,
आओ मिलकर इसे बेहतर बनाएँ।

अनूप धनेतिया,
कार्यकारी अभियंता (स्थापत्य)

राही और दीया

दिव्य है वह दीया जिसके सहारे चल रहा राही एक भी,
भले ही तूफ़ान हो, अंधेरा घना हो चारों ओर,
कम नहीं है हौसला, जो जगमगाए नेक भी।
डगर की कठिनाइयों में जो उम्मीद की किरण लिए एक भी,
वो बुझ कर भी राहों में लिख जाता इतिहास अनेक भी।
मत सोच कि तू अकेला है इस स्याह रात में,
तेरा जलना ही मिटा देता है अंधेरे अतिरेक भी।

- तरुण कुमार लाल
उपमंडल अभियंता (विद्युत-योजना)

बीएसएनएल

हर घर की आवाज़ , हर शहर की पहचान थे हम ,
दूरियों को जो पास कर सके वो भारत की शान थे हम ,
दूर दराज की दुनिया में संचार की आस थे हम |
मुश्किल आयी दौर बदला वक्त भी खिलाफ चला
बाजार का रुख बदला ये भी थोडा धीमे चला
पर ये भी तो केंदर है हालातों से कब डरा
जैसे भी चला पर हर हालत में चला |
भला वक्त कब किसका हुआ, वो भी गया ये भी गया ,
एक नयी उर्जा नयी उमंग के साथ फिर बाजार में आ गया
अब कुछ दिनों की बात है , हर कर्मचारी इसके साथ है |
पूर्ण आशा और भरोसा भी है |
सबको इसको साथ मिलेगा और ये भी सबके साथ है |

राजेश कुमार मीना
जे टी ओ (मिझोरम बी ए)

मैत्री का दीप

रिश्तों की इस सुंदर दुनिया में,
मैत्री सबसे प्यारा नाम,
सुख में जो मुस्कान बाँटे,
दुःख में थामे अपना हाथ।

न कोई ऊँचा, न कोई नीचा,
सबमें एक ही भाव रहे,
प्रेम, सहयोग और सद्भावना से,
हर मन में विश्वास रहे।

छोटी-सी मुस्कान किसी की,
बन सकती है खुशियों की बात,
मीठे शब्दों की खुशबू से,
महक उठे जीवन की राह।

चलो जलाएँ मैत्री का दीप,
अँधियारा हर ओर मिटाएँ,
मन से मन का सेतु बनाएँ,
दूरियाँ सारी आज मिटाएँ।

हम साथ चलें, हम साथ बढ़ें,
हर मुश्किल को मिलकर हराएँ,
एक-दूसरे का हाथ पकड़कर,
नई सुबह की ओर बढ़ जाएँ।

मैत्री केवल शब्द नहीं है,
यह जीवन का सुंदर आधार,
जहाँ प्रेम और अपनापन हो,
वहीं खिलता है सच्चा संसार।

निरंजन कुलकर्णी,
उ म अ (एम एम)

जीवन की कहानी

लोग हमारी जिन्दगी में आते जाते रहते है
कुछ हमारे साथ रहते है और कुछ अनजान बनकर चले जाते है
रास्ते में हमें के मिलते है
कुछ प्यार देते है और कुछ दिल में दर्द छोड़ जाते है
कोई पैसे के पीछे भागता है कोई प्रसिद्धी के
और कोई सिर्फ सुकून भरी जिन्दगी चाहता है
हम सभी सपने है डर है
और बीते हुए वर्षो की अपनी यादे है
जिन्दगी न तो पूरी तरह सही है न हमेशा आसान
लेकिन हर पल हमें कुछ सिखाता है
इसलिए अपने रास्ते में मिलनेवाले लोगों के साथ दयालु रहो
क्योंकि हर इन्सान हर दिन अपनी कोई न कोई लड़ाई लड़ रहा है
एल दिन हमरे जिन्दगी का सफ़र ख़त्म हो जायेगा
और तब यद् रहेगा की हमने दूसरो के लिए क्या किया
न हमारी चीजे न हमारी दौलत
बल्कि हमारा दिया हुआ प्यार और हमारी अच्छाई यद् रहेगी |

देवी सुनार,
ए.टी.टी , शिलांग

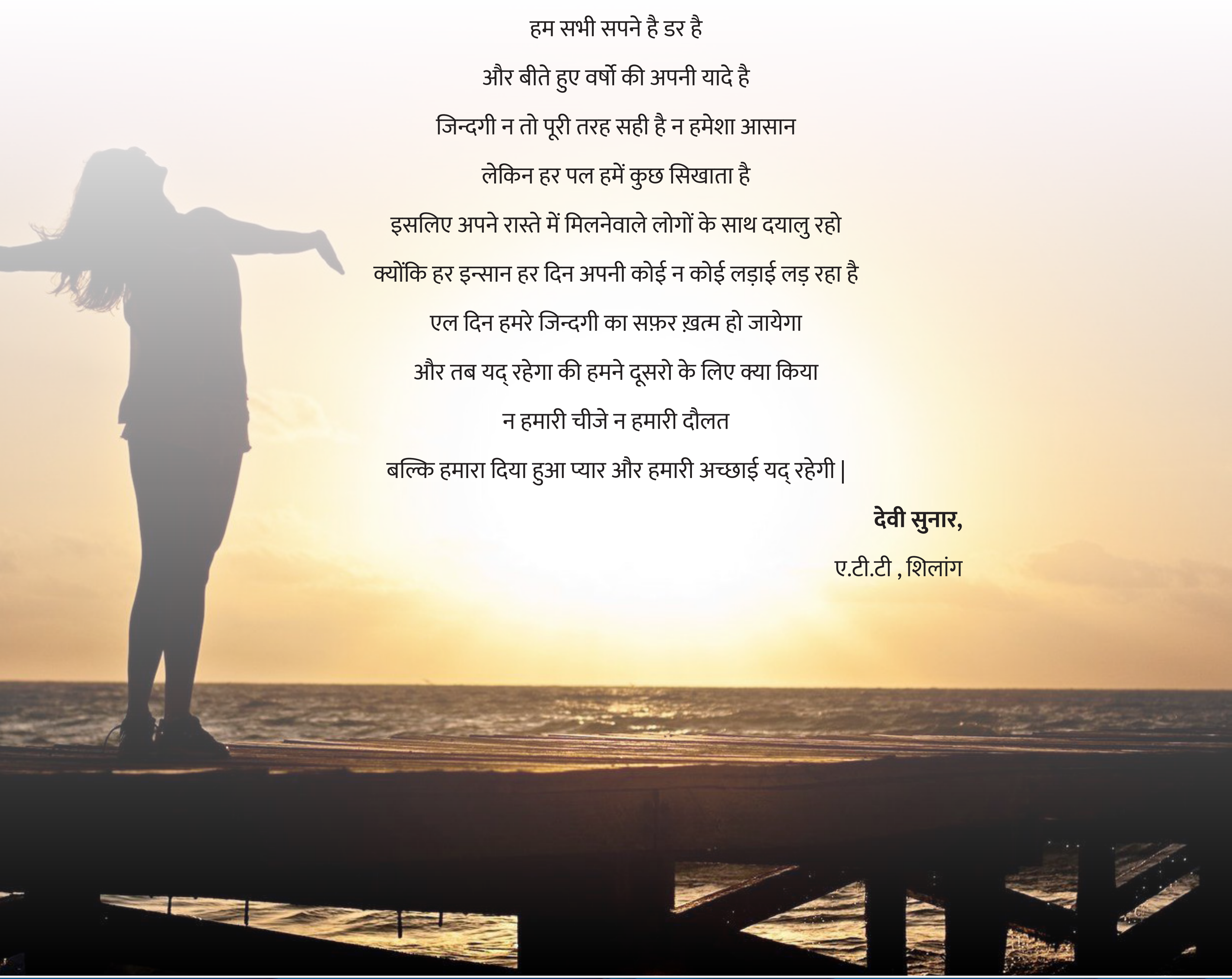

Lokadalat Meghalaya BA

Swadeshi 4G Mobile Network

Swachhata Divas

Women's Day

World Blood Donor Day Pledge

Yoga Day

Press Meet

हम बेवफा हरगिज न थे

हमारा जीवन ईश्वर का दिया हुआ एक उपहार है और हमें नहीं पता कि दूसरा जीवन होता है या नहीं। इतनी कीमती और अनोखी चीज़ निश्चित रूप से संजोने और खुश होने लायक है। लेकिन हमारे पास अन्य जिम्मेदारियां और कर्तव्य होते हैं जो शायद अधिक महत्वपूर्ण लगते हैं, और हम उन प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के तरीकों की तलाश में लग जाते हैं।

हममें से अधिकांश लोग उन प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए नौकरी करते हैं। और हममें से बहुत कम लोग ही इतने भाग्यशाली होते हैं कि उन्हें सरकारी टेलीकॉम कंपनी में सपनों की नौकरी मिल सके।

हमने बहुत अच्छी शुरुआत की और "खुद से पहले सेवा" के भाव और इस सोच के साथ अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाईं कि दिन-रात हम हमेशा ड्यूटी पर हैं। उन दिनों ऑफिस पहुँचना, काम शुरू करना और अगले दिन फिर काम पर लौटने की उम्मीद के साथ ऑफिस से निकलना बहुत अच्छा लगता था। कंपनी भी हमें बहुत पसंद करती थी और अच्छी सैलरी, भत्ते और बोनस देकर हम पर मेहरबान रहती थी। सैलरी कंपनी के स्टैंडर्ड के हिसाब से सबसे अच्छी होती थी और समाज भी हमारे योगदान को मानता था। वहाँ नकारात्मकता के लिए कोई जगह नहीं थी और बॉस काम में सकारात्मकता की तारीफ़ करते थे। मन आज़ाद था और कंपनी व समाज के लिए काम करने को तैयार रहता था। हो सकता है कि नए कर्मचारियों ने वे दिन न देखे हों।

अब कई सीनियर कर्मचारियों को—शायद सभी को नहीं !—ऐसा लग सकता है कि जिस कंपनी में उन्होंने अपनी जवानी दे दी, उसका नज़रिया उनके प्रति बदल गया है । "गुजर दी हमने ये जवानी जिसकी खिदमत में; वो हमें क्यों बेरुखी दिखा रही है" । अब कंपनी से वैसा साथ नहीं मिलता जैसा तब मिलता था । अब कंपनी का साथ पाना मुश्किल हो गया है और वह प्यारा रिश्ता लगातार शिकायत और गिले-शिकवे में बदल गया है। हम कमियां निकालने में ज़्यादा लगे रहते हैं और अपनी कमियों का पता लगाने और उन्हें साबित करने के लिए सिस्टम बनाते हैं। शायद हमारा प्यार और लगन काफ़ी नहीं थी। यह भी सुनने में आता है कि जो लोग कभी कंपनी के सबसे चहेते थे, उन्हें अब " अनचाही / आधिक्य " कैटेगरी में डाला जा रहा है। कंपनी को नए साथी चाहिए, जो शायद बेहतर हों और उसकी सुरक्षा के लिए बेहतर साधनों से लैस हों। हो सकता है कि कंपनी खुद असुरक्षित महसूस कर रही हो और अपनी सुरक्षा के लिए युवा शक्ति (fresh blood) को चाहती हो। वह हमें कमज़ोर (जैसे बायां हाथ) समझती है, जबकि सही ट्रेनिंग और निवेश से हमें और भी मज़बूत बनाया जा सकता है। ज़्यादा मज़बूत और नए लोगों को प्राथमिकता देने को बेवफ़ाई नहीं कहा जा सकता; यह समय की मांग है। समय बदल रहा है और तेज़ी से बदल रहा है। आगे और भी बदलाव होना तय है।

नहीं, मैं इसे सिर्फ़ समय पर नहीं छोड़ रहा हूँ; मैं खुद को बदल रहा हूँ, अपडेट और अपग्रेड कर रहा हूँ ताकि सबसे बेहतर बन सकूँ। तरक्की की कोई सीमा नहीं है और पूरी दुनिया मौकों से भरी पड़ी है।

राकेश शर्मा
उपमंडल अभियंता (नॉक)

मेरा पक्षी

मेरा पक्षी हरे रंग का
हमेशा रस्सी काटते रहता है
पिंजरे में मन नहीं करता उसको रहने का
पंख फैलाकर खुले आसमान में उड़ने का मन उसका
मै तोता , मै तोता, मै तोता
हरा रंग और प्यारा सा हूँ मै
मै छोटा, मै छोटा
मै तोता , मै तोता,
मेरा पंख कटे तो , मै नहीं उड़ सकता |

देवज्ञ हजारिका
पिता : **अभिजित हजारिका**

सुविचार

- जीवन में सकारात्मक सोच ही आपकी जीत सुनिश्चित करती है।
- मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु उसका अज्ञान है |
- समय किसी के लिए नहीं रुकता, इसलिए समय का सदुपयोग करें।
- शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप अच्छे कार्य के लिए कर सकते हैं।
- जीवन बहुत ही सुंदर है, इसे फालतू की बातों और लड़ाई-झगड़े में बेकार न करें।
- जो व्यक्ति अपनी गलतियों से सीखता है, वह असली ज्ञानी बनता है।
- धैर्य और सहनशीलता किसी भी संकट का सबसे अच्छा उपाय हैं।
- जो अपने मन पर काबू पा लेता है, वह पूरी दुनिया पर विजय पा लेता है।
- निरंतर प्रयास करने वाले की कभी हार नहीं होती।
- असफलता, सफलता की पहली सीढ़ी होती है।
- अनुशासन से जीवन में सफलता मिलती है।
- अवसर की प्रतीक्षा न करें, बल्कि अपने प्रयासों से अवसर का निर्माण करें।
- ज्ञान बांटने से हमेशा बढ़ता है, कम नहीं होता।
- आपके विचार ही आपके भविष्य का निर्माण करते हैं।
- कर्म करो, फल की चिंता मत करो।

के. रघु चन्द्र बाबु
उपमंडल अभियंता , मेघालय बीए

स्कूल

हम स्कूल में रोज है जाते
शिक्षक हमको पाठ पढ़ाते
दिल बच्चों का कोरा कागज
उस पर ज्ञान अमिट लिखवाते
जाति-धर्म पर लडे न कोई
करना सबसे प्रेम सिखाते
हमें सफलता कैसे पानी
कैसे चढना शिखर बताते
सच तो ये है स्कूलों में
अच्छा एक इन्सान बनाते

शुभांगी सगुण
पुत्री टी के लाल, उमंअ (विद्युत)

रिश्तों

रिश्तों में उतनी ही मिठास रखिए, जितनी चाय में चीनी,
ताकि न स्वाद बिगड़े और नहीं सेहत .... |

सत्य

कुछ दे या न दे , पर आपके आत्मसन्मान को गिरने नहीं देगा |

संतोष कुमार सिंह
बीएसएनएल

टेन्योर पोस्टिंग

फ़ाइलों के नीचे दबा,
काग़ज़ का एक परिंदा हूँ।
परदेस की इस फ़िज़ा में,
मैं बस नाम का ज़िंदा हूँ।
कहा था -बस दो साल
अब नीति ही बदल गए।।
रिलीविंग का हुक्म न आया,
सारे वादे ढल गए।
बच्चा बड़ा हो रहा दूर,
मेरे तस्वीरों के सहारे।
माँ-बाप रोज़ फ़ोन करते हैं -
कब आओगे घर हमारे
फ़ोन रखते ही चुपके से,
आँखें मेरी भर आती हैं,
कुछ मजबूरियाँ ऐसी होती हैं,
जो आँसू बनकर बह जाती हैं।
अफ़सर कहते रुको ज़रा,
काम अभी जारी है।

मेरे पद-प्रतिष्ठा सब फीकी,
बस घर की याद भारी है।
केंद्रीय दफ़्तर की मोहरों में,
ज़िंदगी मेरी ढलती है,
हर सुबह घर लौटने की आस,
हर शाम तन्हाई में जलती है।
ज़िम्मेदारी के धागों में,
जज़्बात बाँधकर बैठा हूँ।
सरकारी एक अफ़सर हूँ मैं,
चुपचाप सब मैं, सहता हूँ।
कभी छुट्टी के काग़ज़ में,
घर का पता जब लिखता हूँ,
कुछ पल के लिए लगता है जैसे,
सचमुच घर के पास मैं खड़ा हूँ।
कभी तो कोई सुन पाएगा
दर्द मेरे हालात का।
मुख्यालय से जब निकलेगा,
अक्षरों में ख़त राहत का।

कमलेन्दु चौधुरी

वृक्ष हमारे जीवनदाता

वृक्षों से जग में हरियाली,
इनसे जीवन में खुशहाली,
वृक्षों से प्राणों का नाता।
वृक्ष हमारे जीवनदाता।।

फल,भोजन दे भरते थाली,
बढ़ती मुखमण्डल पर लाली,
ताकत से तन मन भर जाता।
वृक्ष हमारे जीवनदाता।।

फूलों से सारा जग भरते,
हर दिन रात सुगंधित करते,
इनका साथ सदा ही भाता।
वृक्ष हमारे जीवनदाता।।

बनकर वैद्य रोग सब हरते,
स्वास्थ्य लाभ से झोली भरते,
पुलकित रोम रोम हर्षाता।
वृक्ष हमारे जीवनदाता।।

सहती ताप सुकोमल काया,
फिर भी देते शीतल छाया,
बैठ छांव में मन सुख पाता।
वृक्ष हमारे जीवनदाता।।

हर प्रकार से ये हितकारी,
करते विविध सहाय हमारी,
इनसे कौन उऋण हो पाता।
वृक्ष हमारे जीवनदाता।।

जयंत नरहरी पंडितराव
उमंअ (स्थापत्य)

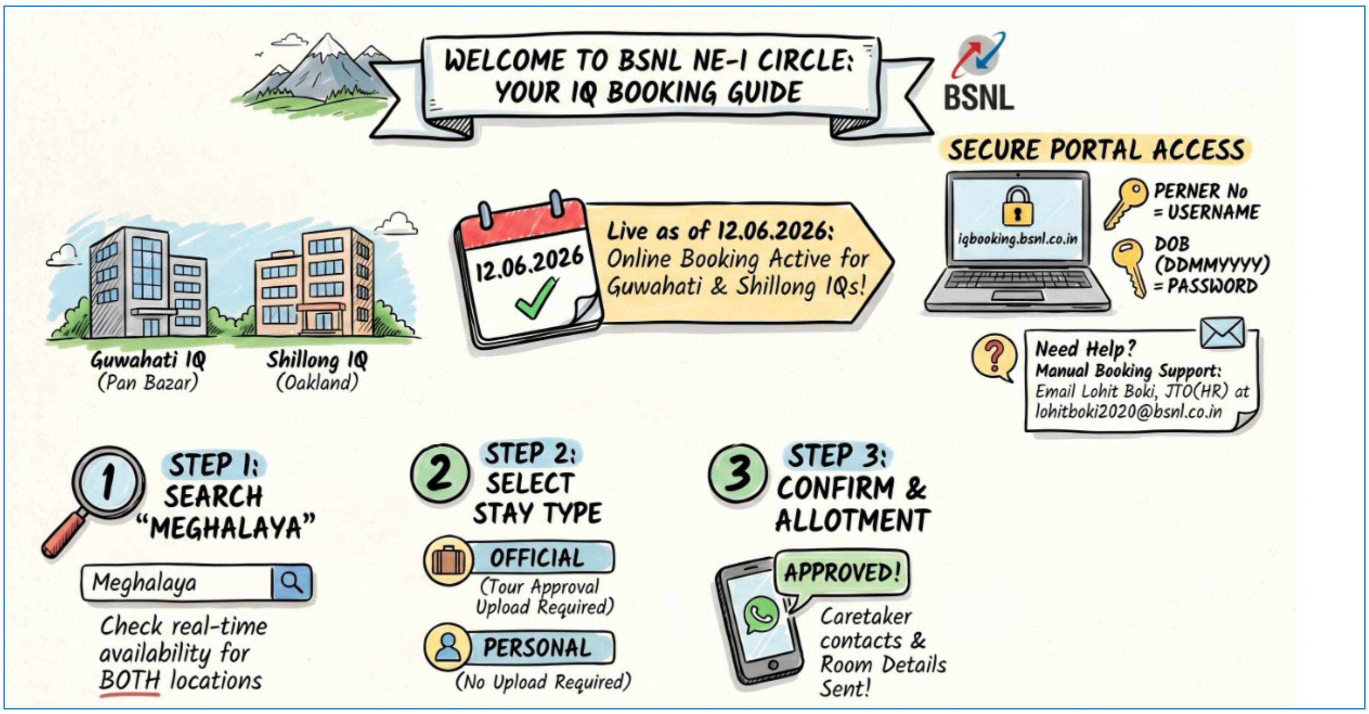

POLYCAB
IDEAS. CONNECTED.
BSNL
POWERING INDIA'S
TELECOM FUTURE
BSNL
POLYCAB
Strengthening India's Telecom Manufacturing
under the Make in India & Atmanirbhar Bharat Vision
WHAT'S IN OFFERING
ELECTRICITY SMART METERS
• Accurate & Reliable
• Real-time Monitoring
• Smart & Secure
EV CHARGERS
• Safe & Smart Charging
• Fast & Efficient
• Future-Ready
ROUTERS & MODEMS
• Fast & Reliable Connectivity
• Stable Network Performance
• Easy & Secure Setup
Paving the way to a
self-reliant Digital India
For more details email us - gmebmumbai@bsnl.co.in

Book
your SIM online
BSNL
Connecting Bharat
Securely • Affordably • Reliably
Avail the FREEDOM2.0 Free SIM ₹1 offer
with 24 Days validity.
1 Need a New SIM?
Why make a simple thing complicated?
Book your BSNL SIM online
2 Book
Book your BSNL SIM online
without standing in a queue
Scan to Book
Online Booking
3 Verify
Complete the process quickly
and get ready for your SIM
Quick Verification
4 Connect
Booked. Verified. Collected
Now, all that's left is to connect
Easy SIM Collection
Unlimited Calls
1GB Data/Day
100 SMS/Day
Only ₹1
24 Days Validity
www.bsnl.co.in
Connect with us @ 1800-180-1503
BSNL SELFCARE NEW APP
Follow us on

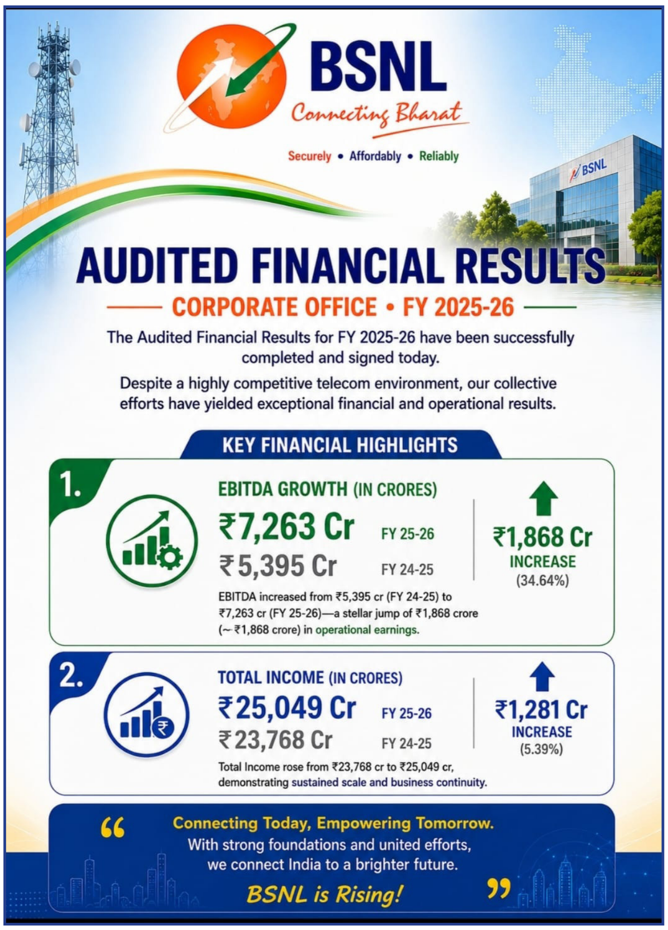
BSNL
Connecting Bharat
Securely • Affordably • Reliably
AUDITED FINANCIAL RESULTS
CORPORATE OFFICE • FY 2025-26
The Audited Financial Results for FY 2025-26 have been successfully
completed and signed today.
Despite a highly competitive telecom environment, our collective
efforts have yielded exceptional financial and operational results.
KEY FINANCIAL HIGHLIGHTS
1. EBITDA GROWTH (IN CRORES)
₹7,263 Cr FY 25-26
₹5,395 Cr FY 24-25
₹1,868 Cr INCREASE (34.64%)
EBITDA increased from ₹5,395 cr (FY 24-25) to ₹7,263 cr (FY 25-26)—a stellar jump of ₹1,868 crore (~ ₹1,868 crore) in operational earnings.
2. TOTAL INCOME (IN CRORES)
₹25,049 Cr FY 25-26
₹23,768 Cr FY 24-25
₹1,281 Cr INCREASE (5.39%)
Total Income rose from ₹23,768 cr to ₹25,049 cr,
demonstrating sustained scale and business continuity.
"Connecting Today, Empowering Tomorrow.
With strong foundations and united efforts,
we connect India to a brighter future.
BSNL is Rising!"

BSNL
Connecting Bharat
Step Into
Faster World
with Bharat Fibre
Bring Fast and Reliable
Internet Home with
BSNL FTTH
Digital e-KYC
Quick & Secure Online Booking
Faster Processing
Reliable BSNL FTTH Connectivity
Book Now
BSNL
SCAN QR CODE to get started
OR
Visit www.bsnl.co.in
And select online service
Or visit the link below
https://bookfibre.bsnl.co.in/
www.bsnl.co.in
Connect with us @
BSNL SELFCARE NEW APP
Google Play
App Store
Follow us on

प्रकृति

सब पर प्यार लुटाने वाली प्रकृति तुम्हारा अभिनन्दन है ।
अनगिन हैं उपकार तुम्हारे तुमसे ही सबका जीवन है ।।
सघन निशा का घोर तमस हर, हर दिन सूरज हमें जगाता ।
हर दिन नई उमंगें भरकर, हम सब को सुख से भर जाता ।।
उमड़ घुमड़कर घिरते बादल, रिमझिम मीठा जल बरसाते ।
घर-आंगन, वन, बाग, खेत, सर, सब पर सुख-सौगात लुटाते ।।
बहती हवा झूमकर हर दिन, सबके प्राणों को बल देती ।
जन, खग, मृग, वन, शाक, लताएँ, बनती सबकी सहज चहेती ।।
आओ, हम भी सारे मिलकर, प्रकृति का आभार जतायें ।
सब मिल करें प्रकृति का रक्षण, जीवन को खुशहाल बनायें ।।

मनोज कुमार सिंह
उमंअ (ई.बी.)

एक नारी

एक नारी
वह अपनी आँखो मे सपने संजोए रखती है,
फिर भी अपने आँसू आसमान के नीचे छुपा लेती है।
वह अपना प्यार देती है, वहअपनी परवाह देती है,
और जीवन कठिन हो, तो चुपचाप खडी रहती है।
वह कोमल, सौम्य और दयालु हो सकती है।
लेकिन उसके भीतर एक निडर शक्ति भी मिलेगी ।
वह कभी कभी गिरती है,लेकिन फिर से उठ खडी होती है ,
अपने संघर्षों को आगे बढने के कदमों मे बदल देती है ।
वह एक बेटी है, माँ है,बहन है,दोस्त है,
एक खुबसुरतआत्मा जिसका कभी अंत नही होता।
उसका मुल्य शब्दों से कही आधिक है,
वह हर दिन के जीवन मे एक नई रोशनी लाती है ।
एक महिला छोटे दायरे में रहने के लिए पैदा नही हुई है,
उसमें हर परिस्थिती का सामना करने का साहस है ।
उसे अपने देखने दो, उसे उडने दो, उसे आगे बढने दो,
क्योंकि एक नारी की शक्ति सिर्फ नही जान सकती है ।

जोगिता दास
ए टी टी ,
परिमंडल कार्यालय , शिलांग

एच आर टीम एक परिवार

जहाँ आत्मीयता का भाव रहे,
जहाँ हर दिल में सम्मान रहे,
इस ऑफ़िस के एचआर विभाग का,
कार्य संस्कृति अब शानदार रहे।
पूर्व एजीएम श्री उमा कांत जी,
मार्गदर्शक बनकर छाए थे।
अपने अनुशासन और स्नेह से,
सबका दिल वो छू पाए थे।
अब संभाला श्री अनिल जी ने,
वर्तमान एजीएम की पहचान बने।
सहज स्वभाव और कुशलता से,
हर कर्मचारी की शान बने।
एसडीई श्री रामानुज कमल जी,
कमल-सा खिलकर मुस्कुराते हैं।
हर उलझन चुटकी में सुलझाकर,
सबका हौसला वह बढ़ाते हैं।
पूर्व जेटीओ श्री विवेक कुमार जी की,
यादों में बसी हर बात रही।

हर निर्णय में विवेक झलकता,
हर कर्म में उनकी निष्ठा रही।
वर्तमान जेटीओ श्री लोहित बोकी जी,
नई ऊर्जा और उत्साह लाते हैं।
अपनी लगन और युवा सोच से,
हर दायित्व बखूबी निभाते हैं।
कॉंग वेर्ना और कॉंग मवखीव की,
स्नेह भरी हर बात रही।
कॉंग लिंगदोह के सेवा भाव की,
सब पर सुखद बरसात रही।
अपनेपन और निपुण कार्य से,
सबका मन ये मोहती हैं।
इन सभी की अथक लगन से,
विभाग की गरिमा बढ़ती है।
यह केवल एक टीम नहीं,
अपनों का प्यारा परिवार है।
इस निष्ठावान एचआर टीम को,
दिल से आभार और प्यार है।

- कमलेन्दु चौधुरी

BSNL
Connecting Bharat
Some bonds deserve a year-long connection
3GB Data/Day
100 SMS/Day
365 Days validity
Unlimited calls
Plan ₹2799/-
RECHARGE NOW WITH BRex
www.bsnl.co.in | Connect with us @ 1800-180-1503 | BSNL SELFCARE NEW APP | Follow us on

BSNL
Connecting Bharat
Stay Connected
Stay Sparked
upto 50 Mbps High Speed Internet
3300 GB Massive Data
Unlimited Voice Calling
All at ₹399*/-month
Book Your BSNL Spark Plan Today
Book now
WhatsApp: 1800 4444
*Introductory price valid for first 12 months from 13th months onwards , plan charges ₹449/month
T&C apply.
#upto 50 Mpbs speed till 3300 GB, beyond that 4 Mbps
www.bsnl.co.in | Connect with us @ 1800-4444 | BSNL SELFCARE NEW APP | Follow us on

BSNL
Connecting Bharat
SIM chahiye?
queue mein
kyun khade hona?
Book your BSNL SIM online, complete quick verification and collect it easily
Book Online → Verify Quickly → Collect Easily
BSNL
Select online service
Visit www.bsnl.co.in
Visit the link below
https://sahaj.bsnl.co.in//selfkyc.html
www.bsnl.co.in | Connect with us @ 1800-180-1503 | BSNL SELFCARE NEW APP | Follow us on

powered by TANGO TV
BSNL
Connecting Bharat
Wait...
Your BSNL SIM does this too?
Your BSNL mobile connection comes with
BSNL's Free Entertainment TV
bringing entertainment right to your phone
Live TV
Movies
Web Series
Music
Devotional
& more
Now available on the New BSNL Selfcare App
Download Now
On Free Trial
www.bsnl.co.in | Connect with us @ 1800-180-1503 | BSNL SELFCARE NEW APP | Follow us on

सच्चाई की ताकत

सच कभी छिपता नहीं है।
झूठ का पर्दा टिकता नहीं है।
धूप सी तीखी है सच्चाई
मन में लती यह भलाई।
राह इसकी कठिन जरूर है।
मंजिल का हर सपना पूरा है।
साथ इसके जो भी चलता है।
वह कभी नहीं है ढलता।
बोलिए हमेशा ही सच आप।
दूर भाग जाए हर संताप।
शान से सर को उठाओ।
ज़िंदगी में सच अपनाओ।

- **दीपंकर शील**

सावन की बारिश

भोलेनाथ के भक्त " हर - हर महादेव " गाते है,
कॉवड लेकर श्रद्धा से मंदिर तक जाते है।
सावन केवल वर्षा नही, भक्ति का त्यौहार है,
हर दिल में शिव का पावन और सच्चा प्यार है।

सावन की बूंदे जब धरती पर मुस्काती है
सुखी डालियाँ भी हरियाली से लहराती है।
मिटटी की सौंधी खुशबू मन को भा जाती है,
हर बूँद को जैसे ईश्वर का सन्देश लाती है।

रीमझिम फुहारों में मोर पंख फैलता है,
कोयल मीठे सुरो में प्रेम गीत गाती है।
नदियाँ, झरने, खेत और वन खिल उठाते है,
प्रकृति हर ओर नया जीवन बरसाती है।

आओ इस सावन मन को भी निर्मल का ले,
द्वेष और अहंकार को अपने से दूर कर दे।
प्रेम, दया और विश्वास की वर्षा होने दे,
भोलेनाथ की कृपा से जीवन को धन्य कर ले।

पूनम देवी (ए टी टी)
परिमंडल कार्यालय, शिलांग

कुछ मोड़ करे देखे.....कुछ जोड़ कर देखे....

क्यों न ज़िंदगी, कुछ मोड़ कर देखे
अच्छा- बुरा वक्त पर छोड़ कर देखे
कुछ तुम समेटो, कुछ मैं भी सँभालु
बिखरे हुए रिश्तो को जोड़ कर देखे।
क्यों न ज़िंदगी...

बोझ लगने लगेगी, हमको ये चाहतें
एक दूसरे से उम्मीदे छोड़कर देखे
दर्द जायेंगे, उम्र भर के लिए
वो खंजर दिवार अब तोड़ कर देख।
क्यों न ज़िंदगी ...

उलझनों में छोड़, दूर दूर निकल जाएगा
चलो वक्त के संग, हम दौड़ कर देखे
बहुत हुई ज़िद, जलन और अहंकार
कभी तो इनकी गर्दन मरोड़ कर देखे।
क्यों न ज़िंदगी...

खुशी बाटने कोतो सब मिल जायेंगे,
किसी के गम मे आँखे निचोड कर देखे,
साँसो की डोर एक दिन टुट जाती है,
वसीयत प्रेम की चलो छोड कर देखे ।
क्यो न जिंदगी....

विलास तांडेकर
सहायक महाप्रबंधक (मो)

पहाड़ों के धागे: मेघालय और त्रिपुरा को उनके हतकरघा कारीगरों की नजरों में

(एक डिज़ाइनर की डायरी: पूर्वोत्तर भारत की दो वस्त्र-परंपराएँ जो दुनिया के रैंप पर जगह पाने की हकदार हैं)

जब भी मैं भारत के पूर्वोत्तर से आया कोई हैंडलूम कपड़ा हाथ में लेती हूँ, मुझे याद आता है कि कोई वस्त्र कभी "सिर्फ़ कपड़ा" नहीं होता। यह एक स्त्री की स्मृति है, एक कुल की पहचान है, एक पहाड़ी की जलवायु है, यानी सब कुछ ताने-बाने में समाया हुआ। मेघालय और त्रिपुरा भौगोलिक रूप से एक-दूसरे से कुछ ही सौ किलोमीटर दूर हैं, फिर भी इनके वस्त्र बिल्कुल अलग डिज़ाइन-भाषा में बात करते हैं। एक डिज़ाइनर के तौर पर यही अंतर सबसे दिलचस्प है, यानी यह समझना कि ये दोनों परंपराएँ अलग क्यों हैं, आधुनिक अलमारी के लिए इन्हें ढालने की पहली सीढ़ी है, बिना इनकी मौलिकता को धुंधला किए।

दो करघे, दो दर्शन

सबसे बुनियादी अंतर दिखावटी नहीं, बल्कि संरचनात्मक है। मेघालय के खासी, जयंतिया और गारो बुनकर मुख्यतः बैक-स्ट्रैप या लोइन लूम पर काम करते हैं, हालांकि गारो समुदाय फ्रेम लूम का भी उपयोग करता है, और यह तकनीक संभवतः असम के बोडो समुदाय से जुड़े ऐतिहासिक संबंधों से आई है। इसी कारण मेघालय के वस्त्रों में लंबे, बहते हुए पैनल दिखते हैं, जैसे टखनों तक लंबा जैनसेम और धारा, या गारो का डकमांडा, जिसमें कभी-कभी तीस से अधिक धारियाँ बुनी जाती हैं, हर एक कुल की उत्पत्ति-कथा बयान करती हुई।

त्रिपुरा के उन्नीस स्वदेशी समुदाय, मुख्यतः त्रिपुरी (बोरोक), रियांग, मग, चकमा, जमातिया और अन्य, भी लोइन लूम पर बुनाई करते हैं, लेकिन इनका उत्पादन एक तीन-भाग वाले परिधान-समूह के इर्द-गिर्द बना है: रीसा (एक स्टोल या वक्ष-वस्त्र), रिग्नाई/पछड़ा (लपेटी जाने वाली निचली स्कर्ट), और कभी-कभी रिकुतु, जो कंधे पर डाला जाता है। जहाँ मेघालय के वस्त्र लंबे, अखंड आवरण जैसे लगते हैं, वहीं त्रिपुरा के वस्त्र एक मॉड्यूलर, परत-दर-परत प्रणाली की तरह दिखते हैं, यानी छोटे आयताकार पैनल जो मिलकर एक संपूर्ण पहनावा बनाते हैं, हर एक का अपना नाम और अपना अवसर।

इतिहास: मौन बनाम उत्सव

मेघालय का वस्त्र-इतिहास शांत है, लगभग घरेलू। वहाँ बुनाई एक पारिवारिक कौशल के रूप में खाली समय में विकसित हुई, और इसकी असली नायिका है एरी सिल्क, जिसे स्थानीय भाषा में रिंडिया कहा जाता है, और यह अरंडी के पत्तों पर पलने वाले रेशम-कीड़ों से गाँव की सहकारी समितियों में हाथ से काता और बुना जाता है। यह एक "शांति रेशम" है, यानी इसे तैयार करने में कीड़े को नुकसान नहीं पहुँचाया जाता, और इसका नरम, हल्का खुरदुरा एहसास बिल्कुल अलग पहचान रखता है। रिंडिया और खासी हैंडलूम उत्पाद, दोनों को अब जीआई टैग (भौगोलिक संकेतक) प्राप्त है, और सोनिडान जैसे गाँवों ने अपनी पहचान ही रेशम-बुनाई के इर्द-गिर्द बनाई है।

त्रिपुरा का इतिहास इसके विपरीत राजसी और लगभग पौराणिक है। स्थानीय जनश्रुति कहती है कि माणिक्य राजवंश ने वस्त्र-संरक्षण को दरबारी जीवन में गहराई से बुना, और कहा जाता है कि महाराजा त्रिलोचन माणिक्य ने अपनी 250 रानियों में से हर एक के लिए अलग रिग्नाई और रीसा डिज़ाइन बनवाए, यानी एक बुनकर का कौशल सीधे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा को दर्शाता था। रीसा सोरमानी नामक समारोह, जिसमें एक किशोरी को उसकी पहली रीसा दी जाती है, आज भी एक महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है। यहाँ वस्त्र सीधे स्थिति और जीवन-गाथा का प्रतीक है, यानी कभी किसी स्त्री का कुल, वैवाहिक स्थिति और रचनात्मक बुद्धिमत्ता केवल उसका वस्त्र देखकर पहचानी जा सकती थी।

आकृतियाँ (मोटिफ़्स): भूदृश्य बनाम वंशावली

यहीं दोनों परंपराएँ सबसे खूबसूरती से अलग होती हैं।

मेघालय की आकृतियाँ संयमित और जैविक हैं। खासी वस्त्रों में साफ़-सुथरी ज्यामितीय पट्टियाँ प्रमुख हैं, जिनमें कभी-कभी फूल, पत्तियाँ जैसे प्रकृति-प्रेरित तत्व जोड़े जाते हैं, पर इस तरह कि वे मूल कपड़े पर हावी न हों। दर्शन है "न्यूनतम पर सार्थक": एक पतली कढ़ाई वाली किनारी भी उतना ही सांस्कृतिक भार उठा सकती है जितनी घनी कढ़ाई। गारो के डकमांडा इस संयम को थोड़ा तोड़ते हैं, गहरे रंगों वाली धारियों का उपयोग करते हुए, जो लगभग वंशावली के बारकोड जैसा कार्य करती हैं।

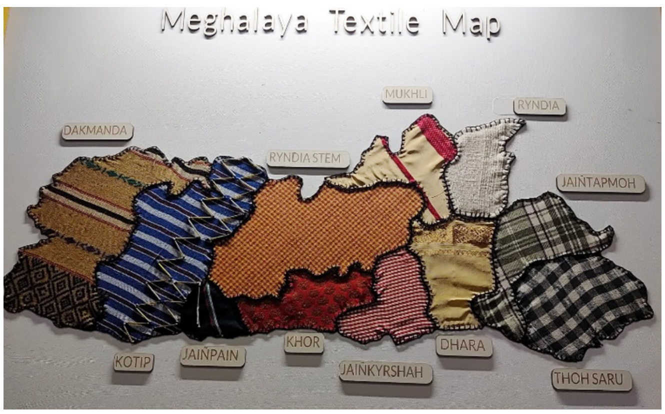

त्रिपुरा की आकृतियाँ घनी, प्रतीकात्मक और लगभग मानचित्र-सरीखी हैं। इनकी शब्दावली त्रिपुरी जीवन के भूगोल-मानचित्र जैसी पढ़ी जा सकती है: नदियों के लिए ज़िगज़ैग रेखाएँ, पहाड़ों के लिए त्रिभुज, और वनस्पतियों, पक्षियों व पशुओं से लिए गए बिखरे हुए ज्यामितीय "ख्वबुंग" पैनल। क्वचक पाली, कोसोम पाली, तखुमत्वी और खमजांग जैसे नामित पैटर्न केवल सजावटी नहीं हैं, बल्कि ये लगभग एक शब्दकोश की तरह काम करते हैं, और विभिन्न जनजातियाँ (चकमा, रियांग, जमातिया, त्रिपुरी) अपने पैटर्न-व्याकरण से ही पहचानी जा सकती हैं, कुछ-कुछ वैसे ही जैसे टार्टन किसी स्कॉटिश कुल की पहचान कराता है।

रंग: मिट्टी बनाम अंगारा

मेघालय का रंग-पैलेट उसके अपने प्राकृतिक परिवेश से लिया गया है: एरी और मलबरी सिल्क के मुलायम सुनहरे और भूरे रंग, जो अक्सर अपने प्राकृतिक रूप के करीब रखे जाते हैं, और कभी-कभार वनस्पति-रंगों से रंगे इंडिगो या मैरून चेक। यह एक संयमित पैलेट है, जो कंट्रास्ट के बजाय बनावट और चमक के लिए बनाया गया है।

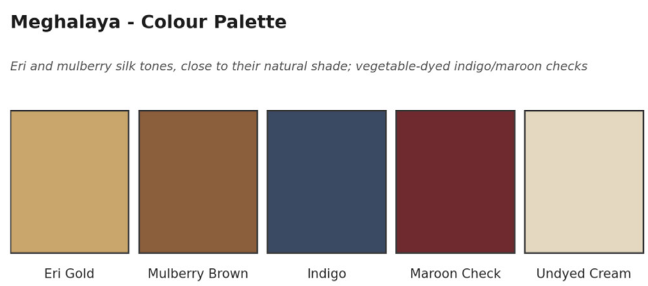

त्रिपुरा का पैलेट कहीं अधिक मुखर और गर्म है: गहरे लाल, किरमिजी, काले और नेवी नीले रंग, जिन्हें तीखे उच्चारण-रंगों से संतुलित किया जाता है; कपास को वनस्पति-रंगों से रंगा जाता है, जो क्षेत्र के घने जंगलों की मिट्टी और लाल छटा को प्रतिबिंबित करते हैं। जहाँ मेघालय फुसफुसाता है, वहीं त्रिपुरा का कपड़ा सचमुच "प्रदर्शन" करता है, क्योंकि आख़िरकार यह समारोहों

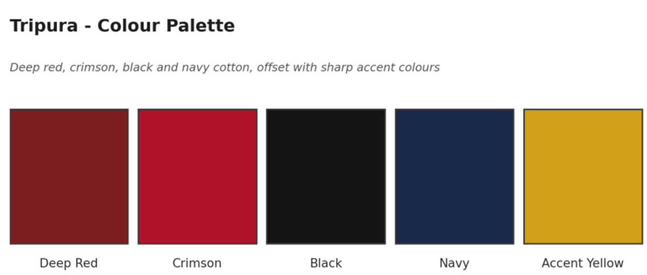

में पहनने, अतिथियों का स्वागत करने और दुल्हन की विवाह-तत्परता दर्शाने के लिए बनाया गया था।

मुख्यधारा भारत अब भी इन्हें क्यों नहीं जानता

एक डिज़ाइनर के रूप में मेरा ईमानदार निदान यह है कि दोनों परंपराएँ एक जैसी तीन समस्याओं से जूझ रही हैं, बस अलग-अलग मात्रा में:

- भौगोलिक और कथात्मक दूरी: न तो मेघालय और न ही त्रिपुरा के पास वह मार्केटिंग ढाँचा है जो असम (मूगा सिल्क, बिहू) या नागालैंड (लोइन-लूम शॉल) जैसे पड़ोसी राज्यों ने बनाया है। इस क्षेत्र से बाहर अधिकांश भारतीय उपभोक्ताओं को यह कहानी बताई ही नहीं गई है।
- परिधान-प्रारूप की असंगति: एक जैनसेम या रिग्नाई शहरी भारत के पहनावे में सीधे फिट नहीं होता। साड़ी, स्टोल, जैकेट या एक्सेसरीज़ में अनुवादित किए बिना, ये वस्त्र "पारंपरिक पोशाक" की श्रेणी में ही सीमित रह जाते हैं और रोज़मर्रा के फ़ैशन में प्रवेश नहीं कर पाते।
- बिखरा हुआ उत्पादन: हैंडलूम उत्पादन अब भी बड़े पैमाने पर गाँव-सहकारी स्तर पर सीमित है। लगातार आपूर्ति-श्रृंखला के अभाव में, बड़े डिज़ाइन हाउस इस पर संग्रह बनाने से हिचकते हैं।

दोनों को लोकप्रिय बनाने के लिए एक डिज़ाइनर की रणनीति

1. आकृतियों को समझें, उन्हें पतला न करें

पंद्रह जनजातियों को एक मूडबोर्ड में समेटने वाले सामान्य "पूर्वोत्तर-प्रेरित प्रिंट" बनाने के बजाय, बुनकर सहकारी समितियों (जैसे जयंतिया हिल्स की मेघालय वीव्स कलेक्टिव) के साथ सीधे काम करें, ताकि मोटिफ़ के उपयोग का लाइसेंस लिया जा सके या सह-निर्माण किया जा सके, और उस विशिष्ट जनजाति व पैटर्न के नाम का श्रेय दिया जाए। मूल-उत्पत्ति (प्रोवेनेंस) अब एक असली बिक्री-बिंदु बन चुकी है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय खरीदार यह जानना चाहते हैं कि यह "क्वचक पाली" है, न कि केवल कोई गुमनाम प्रिंट।

2. सिल्हूट को बदलें, कपड़े को शुद्ध रहने दें

रिंडिया का मुलायम, हल्का-सा खुरदुरा ड्रेप बिना लाइनिंग वाले ब्लेज़र, वाइड-लेग ट्राउज़र या न्यूनतम साड़ी के रूप में बेहद खूबसूरत लगता है, क्योंकि इसकी बनावट अपने आप में इतनी आकर्षक है कि उसे किसी प्रिंट की ज़रूरत ही नहीं। त्रिपुरा के रीसा पैनल, अपने छोटे आयताकार आकार के कारण, मॉड्यूलर उपयोग के लिए एकदम उपयुक्त हैं: एक स्टेटमेंट स्टोल के रूप में, जैकेट के अगले हिस्से पर, या किसी समकालीन कुर्ते पर एक्सेंट बॉर्डर के रूप में, जहाँ घनी आकृति-कारीगरी को केंद्र-बिंदु बनाए रखा जाए, न कि पूरे कपड़े पर फैलाया जाए।

3. जीआई की कहानी को लेबल का हिस्सा बनाएं

रिंडिया और खासी हैंडलूम, तथा त्रिपुरा रीसा और पछड़ा-रिग्नाई, इन सभी को अब भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग प्राप्त है। यह एक तैयार-तैयार प्रामाणिकता-कथा है, इसका उपयोग वैसे ही करें जैसे शैम्पेन या दार्जिलिंग चाय करती है। एक हैंगटैग जो कहे "जीआई-टैग प्राप्त रिंडिया, खासी हिल्स की सहकारी समिति में हाथ से काता गया", यह किसी भी विज्ञापन अभियान से अधिक अंतरराष्ट्रीय विश्वसनीयता दिलाएगा।

4. वहाँ जाएं जहाँ शिल्प-पर्यटन पहले से चल रहा है

वस्त्र-श्रृंखलाओं को क्षेत्र की बढ़ती पर्यटन अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ें: मेघालय का चेरापूंजी/शिलॉन्ग सर्किट और त्रिपुरा के सांस्कृतिक उत्सव (गरिया पूजा, बिजू) लुकबुक और छोटे वीडियो के लिए स्वाभाविक पृष्ठभूमि हैं, जो किसी स्थिर कैटलॉग से कहीं अधिक दूर तक, और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी, पहुँचते हैं।

5. अवसर-निरपेक्ष पहनावे के लिए डिज़ाइन करें

सबसे बड़ा अवसर यही है कि इन वस्त्रों को किसी सामान्य मंगलवार को भी पहनने लायक बनाया जाए, न कि केवल किसी लोक-नृत्य प्रदर्शन के लिए। छोटे संग्रह, जैसे एक रिंडिया स्कार्फ़, एक रीसा-पैनल टोट बैग, या रोज़मर्रा के कपड़े में बना रिग्नाई-

प्रेरित रैप स्कर्ट, इस वस्त्र को उस तरह सामान्य बनाते हैं जैसे कोई पूर्ण पारंपरिक पहनावा पहली बार खरीदने वाले के लिए कभी नहीं कर पाएगा।

अंतिम विचार

मेघालय और त्रिपुरा के वस्त्र एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं हैं, बल्कि ये इस बात का प्रमाण हैं कि पूर्वोत्तर की कभी एक "वस्त्र-पहचान" नहीं रही, बल्कि दर्जनों पहचानें रही हैं, जिनमें से हर एक को अलग-अलग नाम से पहचाने जाने का हक़ है। यहाँ एक डिज़ाइनर का काम कोई नया "पूर्वोत्तर सौंदर्यशास्त्र" गढ़ना नहीं है। यह इतना काफ़ी है कि रिंडिया के शांत सुनहरे रंग और रीसा के उग्र किरमिजी रंग को उनकी अपनी शर्तों पर पहचाना जा सके, चाहे दिल्ली में हो या मिलान में, जहाँ भी इतना ईमानदार कपड़ा देखे जाने का हक़दार है।

- **सुवेना मग. B.Des** (Textile), NIFT Hyderabad, MA(Dev), IIT, Mandi

Strategy to transform Rural Economy of North Eastern tribal states with the help of technology and cooperative units

Rural tribal populace in NE Region suffers from three prominent ailments: (1) Flight of Knowledge, (2) Flight of labour and (3) Short of Market for right price. A village student moves to town and then to a city for higher education. He earns a job there and never returns to his/native village. This causes the flight of knowledge. Those who remained in the village uneducated or half-educated later moved to metropolitan cities for menial jobs. This causes the flight of labour. The remnants, who could produce something, do not get the right price for their labour and investment in the weekly village market as the middlemen from the neigbouring semi-urban centre cartelize to reduce the price of their produce. The real Market is elusive to them. To address these issues, decentralization of governance system was mooted in the form of Autonomous District Councils under the 6th schedule of Indian constitution.

The issues of local Self Governments and Decentralized Governance were greatly dealt by the Commission on the Centre-State Relations under the chairmanship of Retired Chief Justice of India Shri Madan Mohan Punchhi in March 2010. Some of the prominent recommendations were: (1) A model law by the Centre to guide the states in time bound devolution together with transfer of activities with requisite funds and functionaries, (2) Streamlining institutional arrangements between parallel bodies and local governments, (3) Establishment of a Council for dispute resolution and interaction mechanisms at the State level as similar to Inter-State Council at the Centre, (4) Change in the manner of formulation of Centrally Sponsored Schemes and fund transfers and (5) Flow of all central funds to local bodies through the States. The model law and the Council are yet to take place.

There is a need to redefine the role of Autonomous District Councils of NE tribal states in relation to local self-governance under 73rd and 74th amendment of the Constitution. It has been realized that until and unless more autonomy in the form of functioning and finance is given, the ADCs cannot function effectively. In this context, the devolution of transfer grants/awards from the Centre Govt to the State Govt and in turn to the District Council has to be timely and equitable. The success of the Autonomous District Councils fulfilling in their developmental role depends crucially on their capacity to design and implement plans. But the Council does not have proper setup with suitable personnel for planning and coordination. This results in lack in proper liaisons with the state planning department and the central bodies for which the proposals for development schemes and allocation of resources do not go through timely.

At this backdrop, it is felt that the option of cooperative societies in dealing the problems of rural NE India is not yet explored effectively. After India attained Independence in 1947, cooperative development received a boost, with cooperatives being given a vital role in the various plans formulated by the Planning Commission. The First Five Year Plan (1951-56), outlined in detail the vision of the cooperative movement in India and the rationale for emphasizing cooperatives and Panchayats as preferred organizations for economic and political development. The Plan emphasized the adoption of the cooperative method of organization to cover all aspects of community development. It provided for setting up of urban cooperative banks, industrial cooperatives of workers, consumer cooperatives, housing cooperatives, diffusion of knowledge through cooperative training and education and

recommended that every government department follow the policy of building up cooperatives. The Second Five-Year Plan (1956- aimed at enabling cooperatives to increasingly become the principal basis for organization of economic activity. The Plan drew up programs of cooperative development based on the recommendations of the All India Rural Credit Survey Committee (AIRCS). It was envisaged that every family in a village should be a member of at least one cooperative society. Cooperative marketing and processing of agricultural produce formed an important part of the Integrated Scheme of Cooperative Development in the Second Plan. About 1900 primary marketing societies were set up and State Marketing Federations were established in all the States, as well as the National Cooperative Marketing Federation at the Centre. Marketing cooperatives along with the agricultural cooperatives played a major role in promoting the Green Revolution by providing credit and inputs to farmers as well as processing their increased outputs. The Third Five Year Plan (1961- the principal basis of organization in branches of economic life, notably agriculture, minor irrigation, small industries and processing, marketing, distribution, rural electrification, housing and construction and provision of essential amenities for local communities. Even the medium and large industries and in transport and decentralized telecommunication services (broadband to all villages), an increasing range of activities can be undertaken.

From the mid-sixties onwards agro processing cooperatives, particularly in the sugar and encouraging large scale industries in the cooperative sector and term loan assistance from financial institutions. With the setting up of NDDB to replicate the Anand pattern of cooperatives in milk, the Indian dairy cooperative movement received a spurt. Later on NDDB also ventured into the field of edible oils. After the Indo-China war in 1962, both the Consumer Cooperative structure and the Public Distribution System (PDS) was strengthened. The government as a matter of policy decided to give preference to consumer or other cooperatives in the allotment of fair price shops and certain States allotted new fair price shops only to cooperatives. With the growth of public deposits in Urban Cooperative Credit Societies, it was felt necessary to insure these under the Deposit Insurance Scheme of Reserve Bank of India. Selective provisions of the RBI Act 1934 and later Banking Regulation Act 1949 were made applicable to Cooperative Banks w.e.f. March 1, 1966 to regulate their banking business and facilitate insurance coverage of deposits. Thus, they became an integral part of the banking system of the country. Some National Institutions which came into existence in the 1960s The Agricultural Refinance Corporation was set up in 1962 by the Government of India to provide long-term loans to cooperatives, through Central Land Mortgage Banks. In 1963, the National Cooperative Development Corporation (NCDC) was established as a statutory corporation by an Act of Parliament. The establishment of the NCDC gave a great boost to the growth of cooperative marketing and processing societies.

In NE region where the society is clan based, classless, homogeneous and presided by traditional chieftain, the idea of cooperative units should have found immediate acceptance. However, we do not find much of big cooperative societies here as can be seen elsewhere in the country. Limited resources could have been channelized to better productivity through cooperation and entrepreneurship could have been proliferated with shared knowledge. Instead, mushrooming of self-help groups under various schemes, mainly for availing bank loans and short term beneficiary schemes out of political patronage, have grown.

While the existing governance systems in rural NE India are marred with political interference, the cooperative societies could be formed with likeminded homogeneous group, may be led by the migrated knowledgeable individual and

strengthen the pursuit of tangible developments of the members. Something, which is eluded from politically elected bodies, may be feasible with legally sanctified but apolitical body. The possibility of rural development with cooperative bodies after formation of Ministry of Cooperation in 2021 is immense. There is a good initiative to improve the rural connectivity with financial support of DBN (Digital Bharat Nidhi).Under Bharatnet Phase-III widely known as Amended BharatNet Project, Broadband connectivity to all the Gram Panchayats (GP) in the country is envisaged through Optical Fiber Cable in ring topology. Under ABP, all the OLTs will be replaced by MPLS Router (Multiprotocol Label Switching). All the ONTs will be replaced by DATA Router.

BSNL has been given responsibility to roll out the Amended Bharatnet Project and mandated to establish reliable connectivity to the cluster at GP level and to end the digital divide across the country. PIA (Project Implementation Agency) has been engaged and survey works have started.

Successful implementation of ABP in 3 states under NE-1 Circle in coming 2 years shall usher in better communication connectivity in rural and remote areas which shall boost development activities. Coupled with cooperative initiatives, viable economic units can be replicated such that the sons of the soil return to their villages with all knowledge and skills learned outside, bring entrepreneurships and enable their compatriots.

- T. Mag, PGM (S&M and TX)

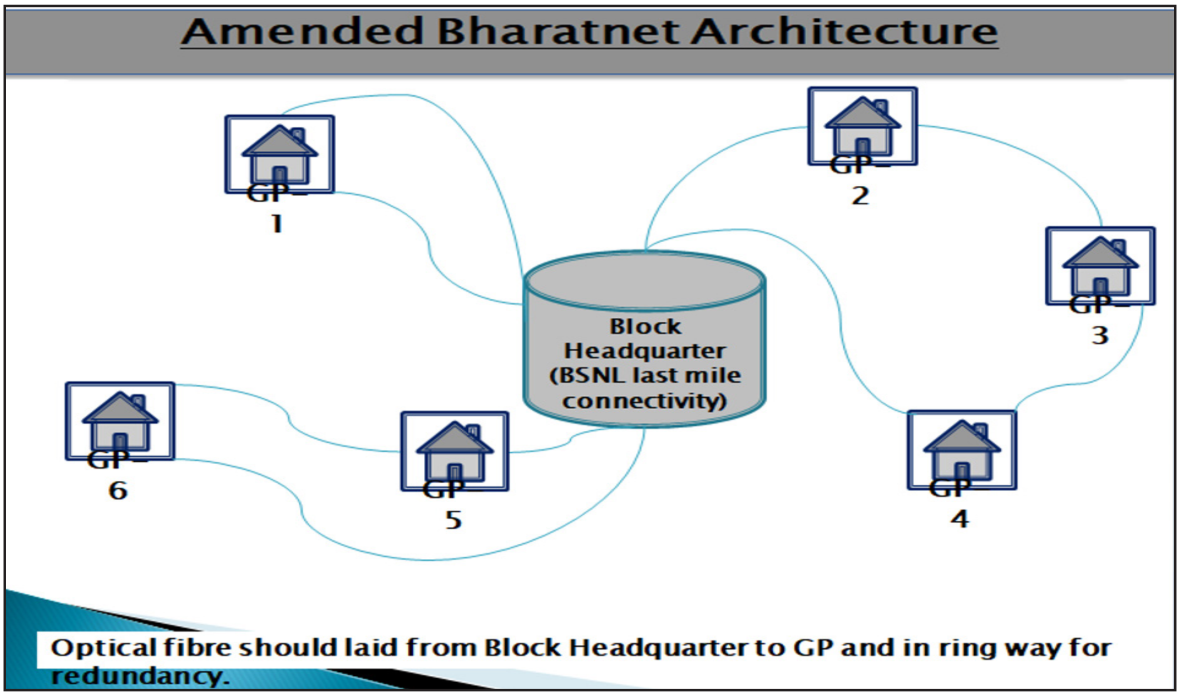

ABP NER-1 – Project Overview

State	District	Block	GP	OFC to be laid (RKM)	New GP	GP for Upgradation
Mizoram	11	26	778	5623	737	41
Tripura	8	58	1124	4300	331	793
Meghalaya	12	46	1915	5700	1789	126
Total	*31*	*130*	*3817*	*15623*	*2857*	*960*

कडवा सच

जो नसीब में है वो चलकर आयेगा

जो नहीं है वो आकर भी चला जायेगा |

जिदंगी को इतना सिरियस लेने की जरुरत नहीं है

दोस्तों... यहाँ से जिन्दा बचकर कोई नहीं जायेगा |

एक सच है की , अगर जिन्दगी इतनी अच्छी होती

तो हम एस दुनिया में रोते रोते नहीं आते

लेकिन एक मीठा सच ये भी है

अगर ये जिन्दगी बुरी होती

तो हम जाते जाते , लोगों को रुलाकर न जाते

जी ले आज कल किसने देखा है |

शिवजी राय,
वाहन चालक , मेघालय बीए

समय

समय का जो रखता ध्यान

जग में होता उसका मान

समय को जो खोता है, बाद में रोता रहता है,

समय कभी नहीं रुकता है

चलता है , बस चलता है |

सफल यहाँ वाही रहता है ,

समय के साथ जो चलता है |

थंगमुअन दास

पिता देबब्रतो दास

अंग्रेजी शब्दों के हिंदी अर्थ

1. Accord – प्रदान करना
2. Acceptance – स्वीकृति
3. Accordingly – तदनुसार
4. Acquisition – अर्जन , उपार्जन
5. Activation – सक्रियण
6. Administrative – प्रशासनिक
7. Bank Guarantee – बैंक प्रत्याभूति
8. Bank Security – बैंक जमानत
9. Bilingual – द्विभाषी
10. Blacklist – काली सूची
11. Endorsement – पृष्ठांकन
12. Currency – मुद्रा
13. Revenue – राजस्व
14. Incentive – प्रोत्साहन
15. Compensation – मुआवजा
16. Book Value – अंकित मूल्य
17. Bonafide Employee – वास्तविक कर्मचारी
18. Breach of Agreement – करार-भंग
19. Budget Allocation – बजट नियतन
20. Budget Estimate – बजट अनुमान
21. Budget Grant – बजट अनुदान
22. Provision – प्रावधान
23. Central Purchasing – केंद्रीय खरीद
24. Competent – सक्षम
25. E-Procurement – ई-खरीद
26. Feasibility – साध्यता
27. Fixation of pay – वेतन – नियतन

अनिलकुमार कुरल्लू
सहायक महाप्रबंधक (मा.सं)

BSNL
Connecting Bharat
Why count the days
when you can simply
keep them coming?
Get 365 412 days of validity
with ₹2399/- including
47 extra days
2GB Data/Day
100 SMS/Day
Unlimited Calls
Because some connections
deserve more time
Offer valid till 12th September 2026
More time.
Stronger connections.
RECHARGE NOW WITH
BReX
www.bsnl.co.in
Connect with us @ 1800-180-1503
BSNL SELFCARE NEW APP
Follow us on

BSNL
Connecting Bharat
WHEN THERE'S
NO TOWER,
THERE'S STILL
A WAY TO CONNECT
Introducing the BSNL Satellite Phone
reliable communication through
satellite connectivity, wherever your
journey takes you.
IDEAL FOR
Defence & Maritime
Disaster Response
Remote Operations
Pilgrimage
Adventure Travel
MADE FOR THE UNREACHABLE
Clear Voice Calls
SOS Emergency Support
Rugged & Durable Design
Long-Lasting Battery
₹1,34,166/-
Inclusive of all taxes
www.bsnl.co.in
Connect with us @ 1800-425-7007
BSNL SELFCARE NEW APP
Follow us on

BSNL
Connecting Bharat
BSNL
SWADESHI 4G
Built for
Bharat
Built for Reliable
Connectivity
Experience the
Swadeshi 4G Network
www.bsnl.co.in
Connect with us @ 1800-180-1503
BSNL SELFCARE APP
Follow us on

BSNL
Connecting Bharat
Ghar mein
signal dhoondhne
ka workout khatam
With
BSNL VoWiFi,
Wifi keeps you
connected
Switch on #BSNLVOWiFi
and stay within reach
Settings
Mobile & Network
SIM Card
Mobile Settings
VoWifi Calling On
www.bsnl.co.in
Connect with us @ 1800-4444
BSNL SELFCARE APP
Follow us on